रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

परिचय

रोमियों के नाम पत्री निस्संदेह मानव द्वारा लिखित दस्तावेजो में सबसे अधिक सामर्थी दस्तावेज़ है। इसका उपयोग किसी भी अन्य पुस्तक की अपेक्षा जीवन को आकार प्रदान करने और उस को परिवर्तन करने के लिए किया गया है। लाखों लोगों ने इस पत्र के द्वारा सुसमाचार संदेश सुना है और अपने जीवन में संपूर्ण परिवर्तन का अनुभव किया है। उन मनुष्य के जीवन परिवर्तनों में से कुछ लोगो ने मानव इतिहास के इतिहास को परिवर्तित कर दिया । जब मार्टिन लूथर ने रोमियों 1:17 को पढ़ा, "मनुष्य केवल विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा ", इस वचन को सुन कर उनकी आत्मा में आग जल गई, उन के द्वारा प्रोटेस्टेंट सुधार आन्दोलन ने यूरोप के इतिहास को परिवर्तित कर दिया। इस के पश्चात, जब जॉन वेस्ले लंदन की कलीसिया में बैठे हुए थे, जब उन्होंने रोमियो की पुस्तक पर लूथर के वक्तव्य को सुना और यह उस के ह्रदय की गहराइयों में उतर गया। वेस्ले ने कहा कि रोमियों की पत्री के सत्य को सुन कर उन का ह्रदय एक विचित्र प्रकार की गर्माहट से भर गया। इस प्रभाव ने महान सुसमाचार जागरण आन्दोलन को जन्म दिया जिसने इंग्लैंड को फ्रांस की जीवन शैली से बचाया और अंग्रेजी जीवन के क्षय को होते हुए जीवन को बंद कर दिया। इस पुस्तक के प्रभाव ने इन दो व्यक्तियों के जीवन में जो प्रभाव उत्पन्न किया उस ने अकेले ही संसार के इतिहास को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया!

सभी शास्त्रों में जीवन और परिवर्तन करने के लिए परमेश्वर की श्वास और सामर्थ सम्मलित है। यह सब भी उस के द्वारा प्रेरित है और उनके चरित्र और सत्य से प्रभावित है। परन्तु यह पत्री अन्य शास्त्रों में अद्वितीय है। इसमें मसीह धर्म के कुल संदेश की शानदार व्याख्या है। इसमें लगभग प्रत्येक मसीह सिद्धांत किसी न किसी रूप में सम्मलित है, और यह मनुष्य के छुटकारे के लिए परमेश्वर की अद्‌भुत योजना का एक पैमाना है। यदि आपके पास इस के अतिरिक्त बाइबल की कोई अन्य पुस्तक नहीं है, तब भी आप यहाँ पर वर्णित मसीह धर्म के प्रत्येक सिद्धांतों की शिक्षा को प्राप्त कर सकते है। यह पत्री वह पत्री है जिस को हम बाइबिल के प्रत्येक पुस्तको की मुख्य कुंजी कह सकते है। परन्तु पौलुस व्यवस्थित धर्मविज्ञान की एक पुस्तक प्रस्तुत करने से अधिक यहाँ पर वर्णन करता है। इन सत्यो के अनुसार किस प्रकार जीवन को जीना है, इसके लिए बहुत व्यावहारिक संदेशो को यहाँ पर प्रस्तुत करता है । जब हम इन सत्यो को ग्रहण कर लेते है तब परमेश्वर हमारे जीवन को, हमारे परिवारों को , हमारे राष्ट्र को और सम्पूर्ण मानव इतिहास को परिवर्तित कर सकता है। इस प्रकार, रोमियों की पत्री का अध्ययन करने के पश्चात् , आपको न केवल यह ज्ञात होगा कि आप को क्या विश्वास करना है परन्तु आप यह ही जान पायेगे कि आप को किस प्रकार से अपने जीवन को व्यतीत करना हैं!

लेखक

निस्संदेह प्रेरित पौलुस रोमियों की पत्री का लेखक है और यह उसकी सबसे बड़ी साहित्यिक उपलब्धि है। यह उसके द्वारा नए नियम में लिखी गयी, 13 अन्य पत्रियों में प्रथम स्थान पर रखी गयी है। पौलुस ने यह पत्री उस समय लिखी जब वह कुरिन्थी में अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर था। उस के पश्चात् उस ने कुरिन्थी के पास सेनच्रिया चर्च की सदस्य फोबिये को पत्र दिया और वह इस को लेकर रोम गई। पौलुस

स्वयं उस प्रसिद्ध दान को लेकर यरूशलेम की यात्रा करता है जो एशिया की कलीसियाओ के द्वारा संगृहित किया गया था ताकि यरूशलेम के आवश्यकता ग्रसित विश्वासियो की सहायता की जा सके।

समय

रोमियों की पत्री रोम के विश्वासियो को प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरित पौलुस ने पिन्तिकुस्त जिस दिन पवित्र आत्मा चेलो पर उतरा था उस के मात्र 25 वर्ष पश्चात् उस ने इस को लिखा था। यह अनिश्चित है कि रोम की कलीसिया की स्थापना किस ने की थी क्योंकि 1) यह मुख्य रूप से अन्यजाती थे और 2) पौलुस ने अभी तक वहां यात्रा नहीं की थी। कुछ लोगों को मत है कि यह यहूदियों का एक समूह था जो पिन्तिकुस्त के समय यरूशलेम में थे और फिर वह रोम लौट आए और वहां पर उन्होंने कलीसिया की स्थापना की। दूसरों का मत है कि यह वह विश्वासी थे जो अन्य कलीसियाओ से आए थे जिन की स्थापना पौलुस ने एशिया, मैसिडोनिया और यूनान आदि मे कि थी वह वहां से आ कर रोम में बस गए और उन्होंने वहां पर कलीसिया की स्थापना की हम जानते है कि भले ही इस कलीसिया की स्थापना किसी भी प्रकार से की गयी हो परन्तु यह कलीसिया प्रारंभ से ही संगठित, स्थिर और विश्वास में उन्नतशील कलीसिया थी (रोमियों 15:14)। पौलुस ने उन्हें वचन या व्यवहार के विषय में सुधरने के लिए इस पत्री को नहीं लिखा, परन्तु उस ने उन को इस कारण से लिखा था क्योंकि उसने उनके विश्वास के बारे में सुना था। उनकी इच्छा थी कि रोम की कलीसिया सुसमाचार के सत्य पर आधारित हों और वह उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने की आशा करता था ताकि उन्हें वह प्रोत्साहित कर सकें (रोमियों 15: 23-25)।

इस पत्री के लेखन काल में, रोम प्रभावशाली वास्तुकला, कला, वाणिज्य और आधुनिक सुविधा युक्त विकसित का एक भव्य शहर था। अधिकंश्ता यह कहा जाता था, "सभी सड़कें रोम की ओर जाती हैं" क्योंकि यह बहुत सारी महत्वपूर्ण और आवश्यक गतिविधियों का केंद्र था। जबकि रोमी अपनी उपलब्धियों में गर्व करते थे, परन्तु उन के पास शर्मिदा होने के लिए भी बहुत से कारण थे। इसमें बड़बोलेपन के नैतिक मानकों और बहुत से देवताओं की आराधना सहित बहुत सी शहरी सामाजिक समस्याएं थीं। हालांकि पौलुस अपनी पत्री में रोम की कलीसिया को उन के साथ समझोता करने के लिए निंदा नहीं करता है, परन्तु वह उन को बाइबिल आधारित विश्वास और अभ्यास के लिए एक स्पष्ट धार्मिक ढांचा प्रदान करता है जो प्रत्येक संस्कृति और समय से ऊपर है।

विषयवस्तु

रोमियों की पुस्तक का विषयवस्तु सुसमाचार है, जो सभी मनुष्यों चाहे वह यहूदी और अन्यजाती हो दोनों के लिए उद्धार और धार्मिकता के लिए परमेश्वर की योजना है हम इस को रोमियो के कुंजी पद 1: 16-1 में प्रमुखता के साथ इस को देख सकते है। "क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा। "

पौलुस इस सुसमाचार की प्रस्तावना को दो भागो मे विभाजित करता है। अध्याय 1-11 "क्या विश्वास करना है" उस पर आधारित अध्याय हैं। विद्वान अधिकंश्ता सुसमाचार की प्रस्तुति को "रोम की सड़क" के नाम से

सम्बोधित करते है (रोमियों 3:10-12, 23; रोमियों 6:23; रोमियों 5:8; रोमियों 10:9-10,13; रोमियों 5:1; रोमियों 8:1,38-39)। इन परिच्छेदों के द्वारा पौलुस इस तथ्य को स्थापित करता है कि किस को उद्धार की आवश्यकता है, हमें उद्धार की आवश्यकता क्यों है, परमेश्वर किस प्रकार उद्धार प्रदान करता है, हम उद्धार को किस प्रकार से ग्रहण कर सकते हैं, और हमारे उद्धार का परिणाम क्या है। वह इस बात को समझाने में कोई संदेह नहीं छोड़ता है कि केवल परमेश्वर ही है जो हम को हमारे पाप के विनाश से बचाने की सामर्थ रखता है। मसीह ने इस कार्य को उस समय पूर्ण किया, जब उसने क्रूस पर पाप के लिए दंड अपने ऊपर ले लिया और उस के पश्चात् उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की, इस प्रकार उस ने हम को अनंतजीवन प्रदान किया। यीशु को अलग कर के कोई मसिहत नहीं हो सकती है और इस लिए यह अति आवश्यक है कि हम उस को जाने।

परन्तु रोमियों की पत्री मात्र सिद्धांत की पुस्तक नहीं है। यह व्यावहारिक अभिरुचि की पुस्तक भी है क्योंकि मसिहत मात्र एक पंथ नहीं है, परन्तु वह जीवन है जिस को विश्वास के द्वारा जिया जाता है। यह इस की मंशा रखती है यह हमारे सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करे और उस को परिवर्तित कर दे । इसलिए, अध्याय 12-16 में पौलुस अपनी द्वितीय विषयवस्तु का परिचय देता है। यह अध्याय "व्यवहार कैसे करें" उस पर आधारित हैं, यह व्यावहारिक खंड जिसमें वर्णित सभी सत्य मानव की प्रत्येक स्थितियों पर लागू होते हैं। वास्तव में, पौलुस इस पत्री का प्रारंभ और समापन मसीह ने जो कार्य किया है उस के प्रति हमारे प्रति उत्तर के साथ करता है " विश्वास की आज्ञाकारिता" (रोमियों 1:5,16:26)। विश्वास के बिना, विश्वास के विना मसीह का उद्धार जो उस ने हम को मुफ्त में प्रदान किया है उस को प्राप्त करना असंभव है और विश्वास के बिना हम वह जीवन नहीं जी सकते है जिस से परमेश्वर प्रसन्न हो सकता है ।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 1: अध्याय 1

विषय वाक्य: हालांकि परमेश्वर ने स्वयं को मानवजाति पर अपने आप को प्रकाशित किया है, परन्तु अधिकंश्ता मानवों ने उसका, उस की योजना का और उस के उद्देश्य को अस्वीकार दिया ।

दिन 1

रोमियों 1:1-7 पढ़े

1. रोमियों की पत्री के पहले कुछ पदों में पौलुस ने स्वयं का वर्णन किस प्रकार किया है?

2. पौलुस किस के विषय में लिखने की मंशा रखता है?

3. उस के अनुसार परमेश्वर के पुत्र ने हम को क्या प्रदान किया है?

4. पौलुस किन लोगो को लिखता है? क्या आप उस उस समूह में सम्मलित है?

5. आप की बुलाहट और उस के प्रेम के लिए परमेश्वर का धन्यवाद

दिन 2

रोमियों 1:8-15 पढ़े

1. इन पदों में परमेश्वर को किन बातों के लिए धन्यवाद करता है .

2. इस संसार में रोमी मसीह किन बातों के लिए जाने जाते है?

3. आप किन बातों के लिए जाने जाना चाहते है?

4. क्या आप किसी व्यक्ति के विश्वास के लिए परमेश्वर के लिए धन्यवाद कर सकते है?

दिन 3

रोमियों 1:16-17 पढ़े

1. पौलुस समाचार से क्यों नहीं लजाता है?
2. क्या आप कुछ बातों को जानते है जिस के कारण परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपने विश्वास के कारण आप को शर्मिंदा और हिचकना पड़ता है?

3. II तीमुथियुस 1:8-12 में कौन सी प्रतिज्ञाए है जो आप को उत्साहित करती है?

दिन 4

रोमियों 1:18-23

1. परमेश्वर के सत्य के साथ मनुष्य ने क्या किया?

2. इस पृथ्वी पर परमेश्वर स्वयं को मनुष्य पर किस प्रकार प्रकट करता है?

3. मनुष्य ने परमेश्वर की महिमा को किस की समानता में बदल दिया?

4. आज कल किन मूर्तियों की आराधना होती है?

दिन 5

रोमियों 1:24-32 पढ़े

1. "परमेश्वर ने उन को छोड़ दिया" इस वाक्यांश को हम इस भाग में कितनी बार पढ़ते है? परमेश्वर इस को किस लिए करता है?

2. सृष्टि कर्ता परमेश्वर को छोड़ कर मनुष्य किस की आराधना करता है?

3. इस पद्यांश में पौलुस जिन पापमय व्यवहारों की सूची प्रदान करता है उन की सूची बनाये?.

4. क्या आप के जीवन में, एक पाप आप को दूसरे पाप की तरफ लेकर जाता है?

5. पद 32 के अनुसार मनुष्य क्या प्राप्ति के योग्य है?

6. I कुरिन्थियों 6:9-11 के द्वारा आप को किस प्रकार का प्रोत्साहन प्राप्त होता है?

7. इस पाठ के द्वारा आप को कौन सी नई चेतावनी या नए विचार प्राप्त हुए है?

हम सभी को यह चुनाव प्रदान किया गया है कि या तो हम सृष्टिकर्ता परमेश्वर के समक्ष अपने आप को समर्पित कर दे या उस का इंकार कर दे

दिन 6

पाठ 1: "परमेश्वर द्वारा प्रकाशित सत्य त्रासदी में परिपरिवर्ती हो गई "

पद्यांश	रोमियों 1
कुंजी पद	रोमियों 1:16, "क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।"
विषय वाक्य	हालांकि परमेश्वर ने स्वयं को मानवजाति पर अपने आप को प्रकाशित किया है, परन्तु अधिकंश्ता मानवों ने उसका, उस की योजना का और उस के उद्देश्य को अस्वीकार दिया।.
जीवन सिद्धांत	**परमेश्वर द्वारा प्रकाशित सत्य त्रासदी में परिपरिवर्ती हो गई "**

सारांश: अभिवादन और संक्षिप्त परिचय के पश्चात्, पौलुस अध्याय 1 पद 15 में लिखने का अपना उद्देश्य प्रदान करता है, "आपको सुसमाचार प्रचार करे"। यह हमें इस पत्री के केंद्रीय विषय को प्रदान करता है जो सुसमाचार है: "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता हूँ यह उद्धार पाने वालो के लिए परमेश्वर की सामर्थ है ..." (1:16)। परन्तु कौन परमेश्वर की सामर्थ से लज्जित होता है? यह ब्रह्मांड का सबसे बढ़ी सामर्थ है। परमेश्वर की सामर्थ ने ब्रह्मांड की सृष्टि की और नियत समय तक इस को स्थिर किये हुई है । परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से, इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया (निर्गमन 32:11)। परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा, यीशु ने आश्चर्यकर्म किया जिन को देख कर लोगों आश्चर्य चकित होते (लूका 9:43)। परमेश्वर की सामर्थ ने मृत्यु की सामर्थ पर जय को प्राप्त किया और यीशु को मृतकों में से जीवित किया (भजन 49:15, 2 कुरिंथियों13:4)। परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा, हम परमेश्वर के पुत्र बनने के लिए बुलाये गए है (1यूहन्ना1:12), और मसीह के दिखो में सहभागी होते है (2 तीमुथियुस 1: 8)। परमेश्वर की सामर्थ विश्वास के द्वारा हमारे उद्धार को बनाये रखती है (I पतरस 1:5)। परमेश्वर की सामर्थ हवा का वह बल है जो हमें उसे प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ने , उस के साथ चलने, उसके लिए कष्ट उठाने और रूपांतरित होने के लिए उभरती है। पौलुस इस सामर्थ को व्यक्तिगत रूप से जानता था और वह इसके लिए शर्मिंदा नहीं था क्योंकि उस ने शाऊल जो कलीसिया को सताने वाले से रूपांतरित करके प्रेरित पौलुस बना दिया था। उसी सामर्थ के द्वारा, पौलुस ने ज्ञात दुनिया में भ्रमण किया, सुसमाचार के बीज बोए, दूसरों को परमेश्वर के साथ सामंजस्य स्थापित करने और उन्हें नए जीवन को धारण करने के लिए आमंत्रित किया।

पौलुस यहाँ से आधारभूत सत्य को समझाता है; कि सुसमाचार से परमेश्वर की धार्मिकता को प्रकाशित करता है। और परमेश्वर की धार्मिकता का तेज प्रकाश मनुष्य के समक्ष उस के पापों को प्रकट करता है। सुसमाचार हमारे अन्दर एक जाग्रति को लेकर आता है कि हम को उद्धार की आवश्यकता है और हमारे उद्धार कर्ता के मूल्य को प्रकाशित करता है। यूहन्ना 16: 8 में यीशु घोषणा करता है, कि पवित्र आत्मा इस प्रक्रिया के लिए अंततः प्रेरणा सोत्र होगा। " और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा। " (यूहन्ना 16: 8)

पौलुस आगे विस्तार से वर्णन करता है कि परमेश्वर किस प्रकार से अपनी धार्मिकता को मानव जाति के समक्ष चित्रित करता है। रोमियों1:20 हमें बताता है, "क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते है, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं।" ध्यान दें, यह पद यह नहीं सुझाव देते है कि सृष्टि के निर्माण के द्वारा परमेश्वर अपने अस्तित्व को प्रमाणित नहीं करता है, परन्तु वह इस को प्रमाणित करता है कि वह कौन है। सृष्टि के द्वारा परमेश्वर के इस ज्ञान को सामान्य प्रकाशन के रूप में जाना जाता है। यह सभी मानवता के लिए अनुग्रह हैं। आप तूफ़ान, तारो, पशु, या मानव शरीर को देखकर आप उस के विषय में क्या सीखते है? इस सब में, परमेश्वर हमारे समक्ष अपनी धार्मिकता को प्रकट करता है।

यद्यपि परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के द्वारा और ब्रह्मांड के नियम के द्वारा स्वयं को प्रकट किया है , परन्तु मनुष्य अधिकाश्ता परमेश्वर की आराधना करने के स्थान पर सृष्टि की आराधना करना पसंद करता है। मनुष्य परमेश्वर के स्थान पर वह उन वस्तुओं की आराधना करता है, जिसका निर्माण स्वयं उस ने किया है या उन को परमेश्वर ने सृजा हैं, " वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।" (1:22-23)। उन्होंने परमेश्वर के सत्य को झूठ में परिवर्तित कर दिया है। इस के प्रतिउत्तर में परमेश्वर उन को उन के हल पर छोड़ देता है, पौलुस तीन बार कहता है, "परमेश्वर ने उन को छोड़ दिया।"

वर्षों से मनुष्य नहीं परिवर्तित हुआ है। इस का परिणाम यह दशा है (पद 29-31):सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव, से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करने वाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी बुरी बातों के बनाने वाले, माता पिता की आज्ञा न मानने वाले। निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मायारहित और निर्दयी हो गए। (रोमियों 1:29-31)

यह विद्रोही लोगों की स्थिति है जो परमेश्वर के प्रति अपनी शत्रुता प्रदर्शित करता हैं और उद्देश्यपूर्वक परमेश्वर अवज्ञा करके उसके सत्य का दमन करता हैं। वे किसी मानदंड का पालन नहीं करते हैं, जैसा उन को अच्छा लगता है उस प्रकार का जीवन व्यतीत करते है और जो कार्य पसंद है उस कार्य को करते है। परिणाम स्वरूप उन का नैतिक क्षय होता है, और जीवन की प्राकृतिक प्रवर्ती विकृत हो गई है। इस अध्याय के आगे वह हमारे प्रति उसके क्रोध को वर्णित करता है। मनुष्य सत्य को दबाता है और जो वस्तुए और कार्य उस को पसंद नहीं आते है उनको छोड़ देता है। ह्रदय, अपनी प्राकृतिक प्रवर्ती में, अत्यधिक दुष्ट और उस को कोई नहीं जान सकता है। केवल सृष्टिकर्ता परमेश्वर ही हमें हमारे पापों की गहराई को समझने में हमारी सहायता कर सकता है।

यह ऐसा है जैसे परमेश्वर मानव जाति से कहा रहा हो , "देखो, मैं नहीं चाहता कि तुम उन कार्यो को करो क्योंकि यह तुम्हें नष्ट कर देगे, परन्तु फिर भी यदि तुम इन कार्यो को करने पर बल देते रहोगे, हाँ तुम इस प्रकार सकते हो, परन्तु तुम को इनके परिणाम को स्वीकार करना होगा। यदि तुम गलत प्रकार से जीवन व्यतीत करने का चुनाव करते हो, तो इस चुनाव के कारण जो परिणाम तुम को उठाने पड़ेगे उस से तुम बच नहीं पाओगे।" जो मानव इस प्रकार करते है उन के लिए उसका निष्कर्ष यह है कि वह मानव मृत्यु के योग्य है।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 2: अध्याय 2 & 3

विषय वाक्य : एक वास्तविक यहूदी वह है जिस का ह्रदय नम्र और पश्चातापी हो

दिन 1

रोमियों 2:1-8 पढ़े

1. हम जिस प्रकार दूसरों का न्याय करते है उस से परमेश्वर जिस प्रकार न्याय करता है उस से अलग है?

2. परमेश्वर की दया हमारे लिए क्या करती है?

3. किन कारणों से परमेश्वर का क्रोध आयेगा (पद 5)?

4. पौलुस के दिनों से लेकर आजतक क्या आप समझते है की मनुष्य के ह्रदय में परिवर्तन आया है?

दिन 2

रोमियों 2:9-29 पढ़े

1. जो भला करता है और जो बुरा करता है उस का क्या परिणाम होता है?

2. क्या परमेश्वर पक्षपात करता है? क्या कोई किसी अन्य से अधिक महत्वपूर्ण है (पद 11

3. कौन धर्मी ठराया जायेगा? क्या यह कोई मायने रखता है कि उन के पास लिखित व्यवस्था है या नहीं

4. परमेश्वर की व्यवस्था कहाँ पर लिखी हुई है (पद15)

5. खतना किस का चिन्ह है?

दिन 3

रोमियों 3:1-24पढ़े

1. कौन विश्वासयोग्य है और कौन विश्वासयोग्य नहीं

2. परमेश्वर की दृष्टि में कौन धर्मी है? कौन परमेश्वर को खोजता है? कौन परमेश्वर का भय मानता है?

3. परमेश्वर के सन्मुख कौन जबाबदेह होगा

4. पद 23 का उपयोग, आप पाप को किस प्रकार परिभषित करेगे?

5. इफिसियों 2:4-5 में कौन से वरदानो का वर्णन पाया जाता है? आप "अनुग्रह" शब्द को किस प्रकार परिभाषित करेगे?

दिन 4

रोमियों 3:25-31 पढ़े

1. 1:7 के अनुसार, पाप के मूल्य के लिए किस आवश्यकता होगी? (लव्यव्यवस्था 17:10-11)

2. किस प्रकार यीशु की मृत्यु ने बलिदानों की आवश्यकता को समाप्त कर दिया? (इब्रानियों 9:11-12, 24- 28 को भी देखे)

3. कौन परमेश्वर के सन्मुख निर्दोष (दोष मुक्त) ठहर सकता है?

4. क्रूस परमेश्वर के विषय में हमें क्या प्रदर्शित करता है? (यूहन्ना 3:16 को भी देखे)

दिन 5

अध्याय 2-3 का पुनरवलोकन

1. परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध स्थापित करने के लिए आजकल मनुष्य क्या कार्यो को करने का प्रयास करता है?

2. क्या परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कोई मनुष्य कुछ कर सकता है? (इब्रानियों 11:6, यशायाह 64:6-7)

3. क्या आप किसी को समझा सकते है कि क्यों यीशु आया, मारा गया, गडा गया और पुनःजीवित हो गया हुआ, (रोमियों 4:25)?

यीशु ने हमारे पापो का मूल्य चुकाया!

दिन 6

पाठ 2: "परमेश्वर न्यायी - परमेश्वर विश्वसयोग्य है "

पद्यांश	रोमियों 2 & 3
कुंजी पद	रोमियो 3:12, " कोई धर्मी नहीं, कोई भी नहीं "
विषय वाक्य	एक वास्तविक यहूदी वह है जिस का ह्रदय नम्र और पश्चातापी हो .
जीवन सिद्धन्त	**यीशु ने हमारे पापो का मूल्य चुकाया !**

सारांश: ऐसा प्रतीत होता है कि जब पौलुस अध्याय एक के 20-31 पद को लिख रहा था, उस समय पौलुस के ध्यान में अन्यजाती थे, परन्तु अध्याय दो में उसने अपने शब्दों को यहूदियों पर केंद्रित किया। अध्याय 2 में प्रस्तुत की गई कठोर वास्तविकता यह है कि सारी मानवजाति ने परमेश्वर के प्रति विद्रोह किया है और इस कारण हम सभी मृत्यु के योग्य हैं। हममें से कोई भी इस योग्य नहीं जो उस के न्याय से बच सके। यहूदी और अन्यजाती परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं। वास्तविकता यह कि, यहूदी लोग भी द्वेष, कलह, छल, कुरूपता, चुगली लुचपन, और इसी प्रक्रार के बहुत सारे अन्य कार्यो में लिप्त है। वे भी, "बुराई के आविष्कारक" हैं ... "मूर्ख, विश्वासहीन, ह्रदयहीन और निर्दयी" है (1:30)। यहूदी परमेश्वर के चुने हुए मनुष्य हैं और जिन के पास परमेश्वर की व्यवस्था हैं, परन्तु उनका भी प्राकृतिक ह्रदय उतने ही दुर्भावनापूर्ण, ईर्ष्या, ईर्ष्या, कलह और एक दूसरे के खिलाफ बुराई से भरा हुआ है हैं जितने कि अन्यजाती का है। वे सभी परमेश्वर के सन्मुख दोषी है।

"परमेश्वर की दया हमें पश्चाताप की ओर ले जाती है", परन्तु हम परमेश्वर के धैर्य और भलाई (2: 4) पर विचार नहीं कर सकते। वह अभिमानी के विरुद्ध खड़ा होता है, परन्तु नम्र मनुष्य पर अनुग्रह करता है । स्वयं पर केंद्रित होना पाप की जड़ है और अधिकंश्ता सत्य को अस्वीकार करने की दिशा में यह प्रथम कदम होता है। जो भूमिका हम इस संसार में बाहरी रूप से निभाते है परमेश्वर उस से परे होकर हम को देखता है। अपने सम्पूर्ण ज्ञान में, परमेश्वर हमारे कार्यो और विचारों दोनों का न्याय करता है। (2: 2-8) वह ह्रदयों को देखता है। सत्य का ज्ञान नहीं जो यहूदियों को बचा सकता है परन्तु पश्चाताप और जीवन परिवर्तन उन को बचाता है। 4-7 उस का न्याय उस व्यवस्था के आधार पर होता है जो उनके ह्रदय में लिखी हुई है। केवल प्रतिक्रिया मात्र पश्चाताप की होना चाहिए। पश्चाताप शब्द एक भावना या एक अच्छा विचार नहीं है। यह वह निर्णायक मोड़ है जो मनुष्य के मस्तिष्क में आता है और वह कार्यो के द्वारा प्रदर्शित होता है, लाने के लिए एक दृष्टिकोण है।

एक यहूदी वह है जिसका ह्रदय परमेश्वर के साथ सही है। आइए हम में से प्रत्येक इसकी जाँच करें कि हम अपने न्यायोचित न्यायी के सन्मुख कहाँ पर खड़े हैं। जो हमारे ह्रदय में है क्या हमारे कार्य उन से मेल खाते है? हम जो करते हैं उसे क्यों करते हैं? हमारी गुप्त की बातो का भी न्याय होगा, तो आइये इस की खोज करे कि परमेश्वर से सत्य क्या है। हमारे किसी भी स्वयं प्रयास को यीशु मसीह द्वारा जांचा जाएगा। हालाँकि, यहूदी और अन्यजातियों के लिए मानक अलग-अलग हैं, परन्तु दोनो का दंड एक है, दोषी ! आप कौन से क्षेत्रो को पवित्र आत्मा के सन्मुख समर्पित करेगे की वह उन में परिवर्तन करने में आप की सहायता करे? हमें इस खोये हुए संसार मे मसीह के स्वरूप को धारण करना है, क्या आप के जीवन में कुछ है जो आप की गवाही में बाधा का कार्य करती है? स्मरण रखें कि पवित्र आत्मा हमें अपने ह्रदयों के विचारो और इच्छाओं को परिवर्तित करने में हम को सामर्थ प्रदान करता है।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 3: अध्याय 4

विषय वाक्य : इब्राहिम, जो हमारे विश्वास का पिता है, वह इस को प्रमाणित करता है कि धार्मिकता केवल परमेश्वर पर विश्वास करने के द्वारा ही प्राप्त होती है

दिन 1

रोमियों 4:1-5 पढ़े

1. यहूदी राष्ट्र का पिता कौन है?

2. आप किस प्रकार जानते है कि पौलुस इब्राहिम को जनता था?

3. किस के द्वारा इब्राहिम को परमेश्वर के सन्मुख धर्मी और सही ठहरा ?

4. हम परमेश्वर के पास किस प्रकार आते है? (गलातियों 2:15-16 को भी देखे)

5. हम भले कार्य क्यों करते है? (इफिसियों 2:8-10 को भी देखे)

दिन 2

रोमियों 4:6-9 पढ़े

1. दाऊद कौन सी तीन बात बताता है जो परमेश्वर हमारे पापों के साथ करता है?

2. भजन 32:1-5 से, अपने पापो की क्षमा प्राप्त करने के लिए दाऊद को क्या करना था?

3. क्षमा की आशीष पर कौन विश्वास कर सकता है?

4. इब्राहीम को कब धर्मी ठहराया गया, खतने के पश्चात या उस से पहले?

दिन 3

रोमियों 4:10-12 पढ़े

1. इब्राहिम के खतने का क्या अर्थ है?

2. हमारा आत्मिक पिता कौन है?

3. कौन सोचते थे कि उन का उद्धार हो जायेगा क्योकि वह शरीरिक रूप से इब्राहिम के वंशज है?

4. इब्राहीम की संतान के रूप में हम वही प्रतिज्ञा को किस प्रकार प्राप्त कर सकते है?

दिन 4

रोमियों 4:13-18 पढ़े

1. व्यवस्था हमारे पास क्या ले कर आई?

2. प्रतिज्ञा हमारे पास क्या ले कर आई?

3. कौन बहुत राष्ट्रों का पिता है ?

4. पद 17 के अनुसार, परमेश्वर किन बातों के लिए जाना जाता है (I कुरिन्थियों1:26-29 को भी देखे)?

5. क्या कोई विश्वास के पिता इब्राहीम के वंशज बन सकता है ?

दिन 5

रोमियों 4:19-25 और उत्पति 18:11-14 पढ़े

1. इसहाक के जन्म के समय इब्राहिम की आयु क्या थी?

2. परमेश्वर के द्वारा पुत्र प्राप्ति की प्रतिज्ञा पर विश्वास करने के कारण क्या इब्राहिम विश्वास में कमजोर हुआ या दृढ हुआ?

3. किस ने यीशु को मृतकों में से जीवित किया? (I पतरस 1:21 को भी देखे)

4. क्या आप परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करते है?

5. क्या आप अपने समूह में दूसरों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिज्ञा को उन के साथ साझा करेगे?

परमेश्वर जो असम्भव कार्य को भी कर सकता है उस पर हमारे विश्वास के द्वारा हमारी आशा का जन्म होता है

दिन 6

पाठ 3: "केवल विश्वास के द्वारा दोषमुक्ति (धार्मिकता) "

पद्यांश	रोमियों 4
कुंजी पद	रोमियों4:20, "और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।"
विषय वाक्य	इब्राहीम, जो हमारे विश्वास का पिता है, वह इस को प्रमाणित करता है कि धार्मिकता केवल परमेश्वर पर विश्वास करने के द्वारा ही प्राप्त होती है
जीवन सिद्धांत	परमेश्वर जो असम्भव कार्य को भी कर सकता है उस पर हमारे विश्वास के द्वारा हमारी आशा का जन्म होता है

सारांश: अब्राहम को हमारे विश्वास के पिता के रूप में जाना जाता है, परन्तु जब प्रथम बार उस ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया उस समय वह परमेश्वर के विषय में बहुत कम जनता था। जब हम उसके जीवन को देखते हैं, तो हम उस विश्वास को देखते हैं जिसकी हमें आवश्यकता है; वह विश्वास जो कार्यो या व्यवस्था पर आधारित नहीं होता है (व्यवस्था अभी नहीं दी गई थी) और न यह खतना पर आधारित था । उद्धार प्राप्ति के पश्चात उनका खतना किया गया (4: 10-12)। इससे यह प्रमाणित होता है कि विश्वास से ही चाहे हम यहूदी या अन्यजाती हो हमें उद्धार प्राप्त होता है।

पौलुस विश्वास और धार्मिकता के लिए पुराने नियम के उदाहरण के रूप में अब्राहम और दाऊद का उपयोग करता है। अब्राहम ने आगे की ओर देखता है और भविष्य में मसीह के आगमन को देखता है । वह इस प्रावधान के लिए परमेश्वर पर विश्वास करता है और विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है । दाऊद भी परमेश्वर पर विश्वास करता था और वह धर्मी ठहराया गया । उसने इस को अपने भजन 32: 1-2 कहा है, "क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो।"

परमेश्वर में उनके दृढ़ विश्वास के पश्चात भी, इन मनुष्यों में से कोई भी परमेश्वर के ज्ञान और उस के साथ विश्वास यात्रा में कोई भी सिद्ध नहीं था। अब्राहम और उसकी पत्नी सारा पुत्र प्राप्ति की परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर भरोसा करने में विफल हो जाते है और इस विषय को अपने हाथों में ले लेते है (उत्पत्ति 16: 2-4)। दाऊद व्यभिचार और हत्या दोनों का दोषी था (II शमूएल 11: 1-27)। परन्तु, परमेश्वर उनकी असफलताओं के पश्चात भी इन मनुष्यों के प्रति विश्वासयोग्य रहा। जो प्रतिज्ञाए उस ने उन से की थी उन को उस ने पूरा किया ।

बहुत सारे मसीह मात्र यही पर रुक जाते हैं। वह सोचते हैं कि उद्धार मात्र नरक से बचना और स्वर्ग में पहुंचने का एक तरीका है, परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह इस से बहुत अधिक प्रदान करता है। हम अपनी आज्ञाकारिता द्वारा व्यवस्था से मुक्त हुए है। हम व्यवस्था के द्वारा प्रकट पाप से मुक्त हैं ताकि हम आज्ञाकारिता में चल सकें। विश्वास में होकर आज्ञाकारिता में चलना, हमें हमारे जीवन का उद्देश्य और अर्थ प्रदान करता है।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की ससार्थ

पाठ 4: अध्याय 5

विषय वाक्य : परमेश्वर का प्रेम हम को अन्दर बाहर से परिवर्तित कर देता है .

दिन 1

रोमियों 5:1-2 पढ़े

1. विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरने के परिणाम क्या है (ध्यान दे इन दो पदों मे दो लाभों की सूचि प्रदान की गई है}

2. यीशु किस प्रकार परमेश्वर के साथ मेलमिलाप (शांति) को लेकर आता है? (इब्रानियों 9:14)

3. आप के लिए यह मेलमिलाप(शांति) क्या अर्थ रखती है क्या आप इस को साझा कर सकते है?

दिन 2

रोमियों 5:3-5 पढ़े

1. कठिन परिस्थितियों में हमारा दृष्टिकोण किस प्रकार का होना चाहिए? और क्यों?

2. दूसरे कठिन परिस्थितियों में जिस प्रकार का व्यवहार करते है उस से इस की तुलना किस प्रकार से की गई है?

3. हमारे अन्दर कठिन परिस्थिति क्या उत्पन्न करती है?

4. हमारे ऊपर परमेश्वर के प्रेम को उड़ेलने में कौन सम्मलित होता है?

दिन 3

रोमियों 5:6-11 पढ़े

1. जब यीशु हमारे लिए मरा उस समय हमारी दशा किस प्रकार की थी?

2. हमारा छुटकारा किस से हुआ है?

3. अब हम क्यों आनन्दित होते है?

4. आप मेलमिलाप को किस प्रकार से परिभाषित करेगे?

दिन 4

रोमियों 5:12-17 पढ़े

1. पाप इस संसार में किस प्रकार से आया? (उत्त्पति 3:1-6 को भी देखे)

2. समस्त मनुष्यों में मृत्यु किस प्रकार फैल गई? (I कुरिन्थियों 15:22 और इफिसियों 2:3 को भी देखे)

3. यह पर पौलुस किस मुफ्त वरदान का वर्णन कर रहा है? (रोमियों 5:21 और इफिसियों 2:8 को भी देखे)

4. हमारे जीवन पर कौन राज्य करता है? (II कुरिन्थियों 4:16-17 और इफिसियों 1:18-21 को भी देखे)

दिन 5

रोमियों 5:18-21 पढ़े

1. अविश्वासियों के जीवन पर कौन राज्य करता है?

2. विश्वासियों के जीवन में क्या राज्य करता है?

3. व्यवस्था प्रदान करने का उद्देश्य क्या था? (रोमियों 7:7 को भी देखे)

4. मसीह यीशु के द्वारा स्वतंत्र होने का अर्थ क्या है? (यूहन्ना 8:31-36 को भी देखे)

5. आप के अनंत काल में यह क्या अर्थ रखता है?

परमेश्वर का अनुग्रह हमारे पापो से बढ़ कर है!

दिन 6

पाठ 4: "परमेश्वर का प्रेम परिवर्तित करता है "

पद्यांश	रोमियों 5
कुंजी पद	रोमियों 5:15, "विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर के समक्ष निदोष ठहरे है, परमेश्वर के साथ हमारा मेल मिलाप है."
विषय वाक्य	परमेश्वर का प्रेम हम को अन्दर बहार से परिवर्तित कर देता है
जीवन सिद्धांत	परमेश्वर का अनुग्रह हमारे पापो से बढ़ कर है!

सारांश: रोमियों के अध्याय 5 में, पौलुस कुछ विशेषाधिकार प्राप्त विश्वासियों का वर्णन करता है, जब उन्हें यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा वह परमेश्वर के सन्मुख धर्मी ठहरे; उन का परमेश्वर के साथ मेलमिलाप, जीवन जीने के लिए परम उस का अनुग्रह, और परमेश्वर की महिमा में भागीदारी, दुख के समय में आनन्द और परमेश्वर के क्रोध से बचाव को प्राप्त किया। वह हमें उन उत्तरदायित्व और संसाधनों के विषय में भी समझाता है जो उस जीवन को जीने के लिए आवश्यक होता है जिस के लिए हम को बुलाया गया है। इन सभी बातों में, पौलुस परमेश्वर के उस मार्ग को तैयार करता है जिस के द्वारा आत्मा का छुटकारा होता है (हमारा मन, हमारी भावनाओं और हमारी इच्छा) ।

पौलुस आदम के साथ यीशु मसीह की तुलना और उन के मध्य जो विरोधाभास है उस का वर्णन करता है । मनुष्य, जो आदम के द्वारा जन्म लेता है और उस पर पाप राज्य करता है से पैदा हुआ है। शरीर (यदि आप इसके लिए बाइबिल शब्द का उपयोग करना चाहते तो) हमारे उपर राज्य करता है। हमारे अन्दर आदम का स्वभाव पाया जाता है, इस के अन्दर आत्म-केंद्रिता की संभी विशेषताओं पाई जाती है। जो आदम के द्वारा जन्म लेते है उन सभी मनुष्यों में जीवन के प्रति जो उन का स्वाभाविक प्रतिउत्तर होता है आत्म-केंद्रित जीवन से परिपूर्ण होता है । और, हम जो आदम मेंहै हम सभी के सभी पापी है और मृत्यु के योग्य है । परन्तु क्रूस पर मसीह की मृत्यु जीवन के लिए एक अवसर को लेकर आई, इस जीवन में और अनंत जीवन दोनो जीवनों के लिए। मसीह में सम्मलित होने के पश्चात, हम आदम में इस जीवन से प्रथक हो जाते हैं और मसीह के साथ एक नए जीवन से जुड़ जाते हैं। उनकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेलमिलाप हो जाता है और हम पाप पाप की दास्त्वता से हम मुक्त हो जाते है। अब हमारे ऊपर पाप और मृत्यु राज्य नहीं करते है इस के विपरीत हम परमेश्वर के प्रेम के द्वारा शासित होते है, और उस का जीवन हमारे अन्दर से जिया जाता है। जैसा पौलुस गलातियों 2:20 में कहता है, " मैं मसीह के साथ क्रूस र चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।"

भले ही हमारी आत्मा को धर्मी तहराया गया है, परन्तु यह संभव है की हम आत्मा के अनुसार तो चल रहे हो परन्तु साथ ही साथ हम पाप से बंधन में जीवन व्यतीत कर रहे हो और पाप हम पर राज्य कर रहा हो। हम आदम में हार, दुख, दिल का दर्द, बंधन और अंधेपन का जीवन जीने का चुनाव कर सकते है। निश्चित रूप से, हम भी मसीह में विजय, महिमा, आशीष, शांति और आनंद का अनुभव कर सकते हैं। आदम और मसीह मात्र उदाहरण नहीं हैं जिनका हम अनुसरण करना चुन सकते हैं। वे प्रभु जो हमारे ऊपर राज्य करना चाहते है, एक के अन्दर एक को नष्ट करने की सामर्थ पाई जाती है और दूसरे के पास हमारा उद्धार करने और अनंत जीवन प्रदान करने की सामर्थ पाई जाती है।

जहाँ एक समय पाप हमारी मृत्यु के समय तक हम पर राज्य करता, अब मसीह नए जीवन प्रदान करने के द्वारा हमारे ऊपर राज्य कर सकता है। अभी, हम अपने इस ही जीवन में, मसीह में विजय का अनुभव कर सकते हैं जहां एक समय हमने आदम केवल में हार का अनुभव किया था। जब आप इस प्रक्रिया को सीखते हैं, तो मसीह में अच्छा होना उतना ही आसान हो जाता है जितना कि आदम में बुरा होना आसान होता है। परन्तु हमें यह जानने में थोड़ा समय लगता है कि मसीह के जीवन को कैसे व्यवहार में लाया जाए। हम प्रथमता इसके साथ संघर्ष कर सकते हैं, लेकिन जैसा कि हम उस पर भरोसा करते जायेगे हैं और विश्वास के साथ हम उस की अगुवाई का अनुसरण करगे, तब दिन प्रतिदिन हमारे कदम (मार्ग) स्पष्ट होते जायेगे।

पद 15-18 में, पौलुस इस को घोषित करता है कि आदम के पाप ने सभी व्यक्तियों को प्रभावित किया है पर विश्वास के द्वारा मसीह मसीह की धार्मिकता सभी के लिए उपलब्ध है। क्रूस पर मसीह का बलिदान, उनका लहू सभी का उद्धार करने के लिए पर्याप्त है, परन्तु वह उन्ही मनुष्यों के लिए प्रभावी है जो इसे विश्वास द्वारा उस को ग्रहण करता है (इफिसियों 2: 8-9)। क्या आपने उनके उद्धार के वरदान को ग्रहण करने के लिए विश्वास का उपयोग किया है?

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 5: अध्याय 6

विषय वाक्य : मसीह के कार्य द्वारा, हम पाप की सामर्थ से मुक्त हो गए है

दिन 1

रोमियों 6:1-7 पढ़े

1. यह प्रदर्शित करने के लिए कि परमेश्वर कितना प्रेमी और क्षमाशील है क्या हम पाप करते रहे?

2. जब हम मसीह यीशु के विश्वासी बन जाते है तब हमारे पापों के साथ क्या हो जाता है?

3. जिस प्रकार बपतिस्मे में दिखाई देता है, मृत्यु से लेकर जीवन तक के चरणों को समझाए

4. आप के लिए यहाँ पर कौन सा उद्देश्य और प्रतिज्ञाए दी गई है? (पद 7 से प्रारम्भ होती है)

5. आज आप किसी अन्य से अपनी स्वतंत्रता को साझा करे .

दिन 2

रोमियों 6:8-11 पढ़े

1. कुलिसियो 3:1-17के अनुसार हम को अपने नए जीवन में क्या उतारना है और क्या पहनना है?

2. मसीह की मृत्यु के द्वारा हम किस से स्वतंत्र हो गए है?

3. मनुष्य जाति के पापो के लिए यीशु को कितनी बार मरने की आवश्यकता थी?

4. हमें मरने के लिए क्या करना होगा और जीवन प्राप्त करने के लिए हम को क्या करना होगा ?

5. 2 कुरिन्थियों 5:17 इस परिवर्तन के विषय में का कहता है?

6. हमारे जीवन में कौन से परिवर्तन आते है जिन को दूसरे लोग देख सकते है?

दिन 3

रोमियों 6:11-14पढ़े

1. यीशु के क्रूस पर किस की सामर्थ नष्ट हुई?

2. अब हमारे जीवन पर कौन नियंत्रण और प्रभाव रखता है?

3. क्या यह एक ही समय का कार्य है या हम को स्वयं के लिए प्रत्येक दिन मरने की आवश्यकता होगी?

4. यदि हम अपने जीवन में पाप को राज्य करने देगे तो इस के साथ कौन से परिणाम प्राप्त होगे?

5. क्या आप "व्यवस्था के अधीन है" (परमेश्वर का अनुमोदन क्रय करने का प्रयास करते है) या "अनुग्रह के अधीन है" (क्रूस पर मसीह के कार्य पर आप निर्भर करते है)?

दिन 4

रोमियों 6:15-19 पढ़े

1. यदि आप "व्यवस्था के अधीन है" इस के परिणाम क्या होगे?

2. यदि आप "अनुग्रह के अधीन है" इस के परिणाम क्या होगे?

3. मसीह से पहले रोमियों की दशा किस प्रकार की थी?

4. वह अब किस से स्वतंत्र हो गए है?

5. क्या आप का जीवन इस को प्रदर्शित करता है कि अब आप के पास नया स्वामी और प्रभु है?

दिन 5

रोमियों 6:20-23 पढ़े

1. पाप करने के लिए अन्यजाती को क्या प्रेरित करता है (गलातियों 6:8 को देखे)?

2. मसीह की आज्ञाकारिता का क्या फल है? (पद 22 पढ़े)

3. पाप का क्या परिणाम क्या होता है? (पद 23 पढ़े)

4. अनंत जवान के लिए हम को क्या मूल्य चुकाना होता है?

5. इस वरदान के लिए परमेश्वर ने क्या मूल्य चुकाया? (कुलिसियों 1:22 पढ़े)

धार्मिकता के यंत्र के रूप में हम स्वयं को मसीह को समर्पित कर सकते है!

दिन 6

पाठ 5: "पाप के लिए मृतक ?"

पद्यांश	रोमियों 6
कुंजी पद	रोमियों 6:23, "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"
विषय वाक्य	मसीह के कार्य द्वारा, हम पाप की सामर्थ से मुक्त हो गए है
जीवन सिद्धन्त	धार्मिकता के यंत्र के रूप में हम स्वयं को मसीह को समर्पित कर सकते है!

सारांश: अध्याय छ हमें पवित्रिकरण की प्रक्रिया से परिचित कराता है, यीशु के समान बनना! पौलुस घोषणा करता है कि परमेश्वर, यीशु की मृत्यु के द्वारा न केवल से, वह हमारे लिए मारा गया, परन्तु यह भी कि हम भी उस के साथ मर गए। पद 3 कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया?" हमारे पुराने पापी स्वभाव को उनकी मृत्यु में उनके साथ या "बपतिस्मा" के साथ गाड़ दिया गया। और जब वह मरे हुओं में से जी उठा, तो हम भी उस के साथ जीवित किये गए। परिणामस्वरूप, हम अपने पुराने पापी स्वभाव के लिए मर चुके हैं, परन्तु अब हम अपने नए स्वभाव के लिए जीवित हैं जो मसीह में है। ये एक अटल सत्य हैं! अब हमारे जीवन में पाप की सामर्थ नष्ट हो गई है और हमें मसीह में आनन्दित होने के लिए एक अद्‌भुत नया जीवन प्रदान किया गया है!

जब परमेश्वर ने घोषणा की कि उसने हमें आदम के जीवन से मुक्त कर दिया और हमें मसीह के जीवन से जोड़ दिया, तब हम को इस को वास्तविकता के रूप में स्वीकार करना चाहिए। यह एक सत्य है जिसे हमें थामे रहना चाहिए, हालांकि हमारी भावनाएं हमें अलग-अलग प्रकार से बताती हैं। हो सकता है कि हम अपने आप को मसीह के साथ मृत अनुभव न करे, हो सकता है कि हम अनुभव करते हो कि दुष्टता हमारे अन्दर अभी भी जीवित है और वह अभी भी हम पर नियंत्रण रखती है कि हम बुरे कार्यो को करे। हो सकता है कि हम स्वयं को असंतुष्ट अनुभव करे, और भयभीत हो कि जिस कार्य को आप करना चाहते है उस को आप नहीं कर पायेगे या आप उस अनुभव को नहीं प्राप्त कर पायेगे जिस का अनुभव आप के चारो ओर के लोग अनुभव करते है। परन्तु विश्वास के द्वारा, हम अपने प्रतिदिन के दबावों और प्रलोभनों का सामना कर सकते हैं और और जो परमेश्वर कहता है कि वह सत्य है उस के अनुसार कार्य कर सकते हैं, हलाकि हम उस को तब भी कर सकते है जब हम उस को इस प्रकार अनुभव नहीं करते हो। हमारा जीवन हमारी परिवर्तित होती हुई भावनाओं पर आधारित नहीं है, परन्तु परमेश्वर पर है जो कभी नहीं बदलता है और प्रत्येक पीढ़ी में एक समान रहता है।

यह शैतान का झूठ है कि पाप की सामर्थ हमारे ऊपर है। हम यह चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं कि हम किसके दास बनेगे। हम अपने पुराने स्वामी से स्वतंत्र हैं और अब भलाई और धार्मिकता के नए स्वामी की सेवा करते हैं। पद 12 कहता है, हमें पाप को स्वयं पर नियंत्रण नहीं करने देना चाहिए और ना ही उस के सन्मुख स्वयं को समर्पित करना चाहिए। प्रत्येक दिन सुबह आत्मा के नियंत्रण के लिए स्वयं को नए सिरे से तैयार कर सकते हैं। जैसा कि पद २२ कहता है, "परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बन गए हैं।" क्या आप विश्वास करेंगे कि वह जो कहता है वह सत्य है और उस के अनुसार कार्य करेगे है? यदि आप इस प्रकार करते हैं, तब आप को अति शीघ्र यह ज्ञात हो जायेगा कि यह सत्य है और आप सही रूप से स्वतंत्रा में चले। पवित्र आत्मा से मांगे की वह आप के जीवन में उन भागों को दिखाए जो पाप है और यह प्रदर्शित करे कि आप के जीवन में से इस पाप को दूर करने के लिए मसीह किस प्रकार कार्य करना चाहता है।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 6: अध्याय 7

विषय वाक्य: हमारी आशा, लोगो या परिस्थितियों पर आधारित नहीं होती है परन्तु परमेश्वर पर है जो सर्वशक्तिमान और प्रेमी है

दिन 1 & दिन 2

रोमियों 7:1-6 और इफिसियों 2:1-5

1. किसी पुरुष और स्त्री के ऊपर व्यवस्था का अधिकार कितने समय तक रहता है?

2. हम किस प्रकार से व्यवस्था से स्वतंत्र हुए है

3. जब हम परमेश्वर से सम्बन्ध रखते है और व्यवस्था से स्वतंत्र हो गए है, तब हमारा नया उद्देश्य क्या है?

4. जब हम पाप के दासत्व में थे उस समय हमारा पापमय स्वभाव कौन से फल उत्पन्न करता था?

5. इन पदों के अनुसार, उन फलों के नाम बताये जिन को आप उत्पन्न कर सकते है:
   I. गलातियों 5:22-23
   II. इफिसियों 5:9
   III. यूहन्ना 4:27-39?

दिन 3

रोमियों 7:7-13 पढ़े

1. व्यवस्था हमारे लिए क्या करती है?

2. किस ने व्यवस्था और उस की मांग को पूरा किया? (मत्ती 5:17-20 देखे)

3. पाप से जो हम संघर्ष करते है उस को कौन समझ सकता है? (इब्रानियों 2:14-18 देखे)

दिन 4

रोमियों 7:14-24 पढ़े

1. हम अपने शरीर में प्रत्येक दिन किन संघर्षों का सामना करते है?

2. पाप के बहकावे में आने का क्या परिणाम होता है?

3. पाप पर जय पाने का परिणाम क्या होता है? (पद 25)

दिन 5

रोमियों 7:22-25 और इफिसियों 4 पढ़े

1. यह युद्ध कहाँ पर होता है?

2. हम किस प्रकार इस युद्ध को करते है? (2 कुरिन्थियों 10:1-5 को देखे)

3. पाप की सामर्थ से किस की उपस्थिति हम को स्वतंत्र करती है?

4. प्रत्येक दिन आप के जीवन को नया करने में आप की सहायता करने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दे

प्रत्येक दिन स्वयं के लिए मरना जीवन में परिवर्तन और स्वतंत्रा लता है .

दिन 6

पाठ 6: "परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए जीवन जिए ?"

पद्यांश	रोमियों 7
कुंजी पद	रोमियों7:4, " सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं। "
विषय वाक्य	पाप के लिए मरे, परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित हो
जीवन सिद्धांत	प्रत्येक दिन स्वयं के लिए मरना जीवन में परिवर्तन और स्वतंत्रा लाता है

सारांश: अध्याय 7 में, पौलुस समझाता है कि हमारा पुराना स्वभाव न केवल पाप के लिए मृत है, परन्तु वह अच्छे कार्यों के लिए भी मृत है। हमारे शरीर में, हम उस फल को उत्तपन नहीं कर सकते जिस से परमेश्वर प्रसन्न होता है।

हम इस को समझते हैं,यहाँ तक की हमारे मसीह बनने से पहले भी, कि हमारे प्राकृतिक जीवन (शारीर) के कुछ पहलू खराब थे क्योंकि इन के कारण हम बहुत बार संकट मे पपड़ जाते थे। हम जानते हैं कि स्वार्थी होना बुरा होता है। हम जानते हैं कि यौन दुराचार करना बुरा है। हम जानते हैं कि चोरी करना और झूठ बोलना बुरा है। ये चीजें शरीर के द्वारा उत्पन्न होती है और हम समझते हैं कि शरीर के कार्य दुष्ट हैं। इस कारण, हम इन बुरे व्यवहारों को रोकने के लिए कार्य कर सकते हैं, परन्तु यह धार्मिकता नहीं है, और न ही यह हमारे मसीह जीवन की यात्रा में कोई अर्थ और उद्देश्य प्रदान करते है। जब हमारे जीवन से पाप को नष्ट कर दिया जाता है, तब हमारे जीवन में एक रिक्त स्थान हो जाता है, जिसे हमें एक ईश्वरीय, उद्देश्यपूर्ण जीवन से भरने की आवश्यकता है ।

इस तथ्य के बावजूद कि हमने सीखा है कि जिन बातो को हम बुरा कहते है और अभी भी हम उन के बंधन में बधे हुए है, उन पर किस प्रकार से हम विजय प्राप्त प्राप्त करनी है। हम अपने मसीह जीवन में जिस सामर्थ का अनुभव प्राप्त करना चाहते है वह अभी भी हमारे पास नही है? हम नहीं जान पाए है कि बुरा क्या है? अभी तक हम यह नहीं जान पाए है कि हम शरीर के जिन कार्यो को हम अच्छा समझते है वह भी उतने ही बुरे है जितना की दूसरे बुरे है। स्वयं के प्रयास से, परमेश्वर के लिए कुछ करने का प्रयास करते है, या जो कार्य हम परमेश्वर के लिए करते है उन के द्वारा हम अपने लिए कुछ लाभ अर्जन करने का प्रयास करते है, यह भी उतने ही बुरे कार्य है जितने की अन्य दूसरे बुरे कार्य। जब हम अन्तः हम यह सीख जाते है कि हम स्वयं के प्रयासों से परमेश्वर के लिए कुछ भी नहीं कर सकते है, परन्तु उस के द्वारा हम सभी कुछ कर सकते है, तभी हम वास्तविक छुटकारे को प्राप्त करते है(फिलिपियों 4:13)। पौलुस रोमियों 7:24-25 में इस अनुभव की घोषणा करता है, "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? 25 मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं: निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं!" जब हमारा मन, हमारी भावनाए मसीह के नियंत्रण मे देने के लिए लाई जाती है तब हम उस की अद्भुत , विजयी सामर्थ के द्वारा वह सभी कुछ कर सकते है जो उस के मन मे हमारे लिए करने के लिए है। वह अकेले ही है जो हमारी आत्मा को नरक में जाने से बचा सकता है और हमारी आत्माओं को भी पवित्र कर सकता है।

आप अपना भरोसा कहां रखते हैं? क्या आप अपने नए जीवन के लिए मसीह के ऊपर निर्भर करने और उस से सीखने के स्थान पर स्वयं के प्रयासों और सामर्थ पर निर्भर करते है? इस पर ध्यान दे जो मत्ती 11:29-30 में यीशु क्या कहता है। "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। 29 मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। । क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है। यह "अनुग्रह " है। एक बार जब हम स्वयं के प्रयासों पर विश्वास करना बंद कर देते है और स्वयं का सम्पूर्ण भरोसा परमेश्वर पर रखने लगते है, तब हम उस के अनुग्रह को प्राप्त कर सकते है। उसने जो समय, प्रतिभा और संसाधनों को हम को दिया है उस के द्वारा हम वह कार्यो को कर सकते है जिन को परमेश्वर का अनुग्रह हम को करने की अनुमति प्रदान करता है। उस अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि, हम अपने पापो के लिए मर जाये और उस की अधीनता में जीवन व्यतीत करे, उस के चरणों में बैठे और उस की सुने। उस का पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी के अन्दर वास करता है, इस कारण से वह हमारे लिए प्रत्येक समय उपलब्ध रहता है। वह कभी छिपता नहीं है, कभी नहीं ऊबता, कभी अनुपलब्ध नहीं होता, कभी चुप नहीं रहता। और जब हम उस के द्वारा जीवन व्यतीत करते है तब उस का अनुग्रह एक मीठी सुगंध के सामान होता है, जो हमारे द्वारा उन सभी मनुष्यों पर प्रकट होता है जिन का छुटकारा हो चूका है और उन पर भी जो नाश हो रहे है। (2 कुरिं । 2:15) यह वह अनुग्रह है जो इस पृथ्वी पर हमारी यात्रा के लिए पर्याप्त है।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 7: अध्याय 8

विषय वाक्य : हमारी आशा , लोगो या परिस्थितियों पर आधारित नहीं होती है परन्तु परमेश्वर पर है जो सर्वशक्तिमान और प्रेमी है

दिन 1

रोमियों 8 और 8:1-4 तक पढ़े

1. अध्यय 8 में पौलुस कितनी बार " आशा" शब्द का उपयोग करता है?

2. दोष से कौन स्वतंत्र हो गया है?

3. हम पाप की व्यवस्था और मृत्यु से किस प्रकार स्वतंत्र हुए है? (पद 2-3)

दिन 2

रोमियों 8:5-11 पढ़े

1. आत्मिक मनुष्य और शारीरिक मनुष्य मे क्या अंतर है?

2. इस दो प्रकार के जीवन के पत्येक का क्या परिणाम होता है?

3. उस मन की व्याख्या करे जो शरीर पर मन लगता है (पद7-8).

4. परमेश्वर की संतान के अन्दर कौन अंतर उत्पन्न करता है?

दिन 3

रोमियों 8:9-17 पढ़े

1. आत्मा की अगुवाई मे कौन चलता है?

2. पवित्र आत्मा का वर्णन किस प्रकार किया गया है?

3. पवित्र आत्मा के साथ हमारे सम्बन्ध है उस के विषय में यूहन्ना 14:16-17 में क्या कहा गया है?

4. पापी स्वभाव के अनुसार जीवन जीने के क्या परिणाम होते है?

5. आत्मा के अनुसार जीवन जीने के क्या परिणाम होते है?

6. दासत्वता की पुरानी आत्मा का क्या परिणाम उत्पन्न होते है (पद 15)?

7. लेपालक की नई आत्मा का क्या परिणाम उत्तपन होते है ?

<u>दिन 4</u>

रोमियों 8:18-25 पढ़े

1. 2 कुरिन्थियों11:23-27 के अनुसार, जब वह इस अध्यय को लिख रहा था, उस से पहले वह किन कठीनाईयों का अनुभव कर चूका था?

2. पौलुस अपने भविष्य से इन कठीनाईयों की तुलना किस प्रकार से करता है?

3. जब मसीह वापस आयेगा, कौन अपने भविष्य के उस दिन का बहुत उत्सुकता के साथ इंतजार कर रहा है?

4. उत्त्पक्ति 3:17-19 के अनुसार, जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा ना मानने का चुनाव किया था उस समय मानव के साथ ही साथ इस सृष्टि के साथ क्या हुआ?

5. जब मसीह आयेगा तब हमारे लिए जो आशीष है वह कौन सी पूरी होगी?

<u>दिन 5</u>

रोमियों 8:26-39 पढ़े

1. कौन परमेश्वर के लोगो को जानता है और उन की कमजोरी में उन के लिए निवेदन करता है?

2. एक विश्वासी के लिए किस प्रकार प्रार्थना करनी है इस को पवित्र आत्मा किस प्रकार जनता है?

3. आप के लिए पवित्र आत्मा प्रार्थना करता है इस के लिए उस को धन्यवाद दे.

4. आप के लिए यीशु के द्वारा परमेश्वर ने क्या किया है उस का वर्णन कौन से शब्द करते है?

5. यदि परमेश्वर हमारे साथ है, तो कौन हमारा विरोधी हो सकता है? (भजन 37:12, 1पतरस 5:8, और रोमियों 7:5 को देखे)

6. उन बातों की सूचि बनाये जो हम को परमेश्वर और उस के प्रेम से अलग नहीं कर सकती है? (38-38

7. क्या आप इस प्रतिज्ञा को जिस ने आप की सहयता की और जो दूसरों की कर सकती है उस को साझा कर सकते है

यह विश्वास करने का चुनाव करे की आप दोषी नहीं है बरन आओ परमेश्वर के अनंत प्रेम में स्वतंत्र और सुरक्षित है!

<u>दिन 6</u>

पाठ 7: "हमारी आशा सर्वशक्तिमान और प्रेमी परमेश्वर पर निर्भर करती है "

पद्यांश	रोमियों 8
कुंजिपद	रोमियों8:38-39 "क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।"
विषय वाक्य	हमारी आशा, लोगो या परिस्थितियों पर आधारित नहीं होती है परन्तु परमेश्वर पर है जो सर्वशक्तिमान और प्रेमी है
जीवन सिद्धन्त	यह विश्वास करने का चुनाव करे की आप दोषी नहीं है बरन आओ परमेश्वर के अनंत प्रेम में स्वतंत्र और सुरक्षित है!

सारांश: यहाँ अध्याय 8 में, पौलुस ने हमारे और हमारे अन्दर परमेश्वर के कार्य के विषय में चर्चा को समाप्त करता है। जबकि हम अभी भी इस जीवन में हैं, शरीर का अभी छुटकारा नहीं हुआ है। परन्तु तथ्य यह है कि हमारी आत्मा को धर्मी ठहराया जा चूका है और हमारी आत्मा का पवित्रीकरण किया जा रहा है, यह इस को सुनिश्चित करता है कि परमेश्वर एक दिन शरीर का भी छुटकारा (गौरवमय) करेगा (8:11)। जब हम मसीह की उपस्थिति में अंततः उपस्थित किये जायेगे उस समय हम पूर्ण रूप से सिद्ध (शरीर, आत्मा और आत्मा) हो कर खड़े होगे!

हमारे अन्दर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ हमारे नए जन्म से प्रारंभ हो कर वह अनंत काल तक चलती रहती है। हमारे पास एक नया स्वभाव है, एक नई सामर्थ है, एक नया दायित्व है जो जीवन जीने के लिए हमारे विचारो को परिवर्तित कर देता है, और उस की संतान के रूप में उस के परिवार में अपनाये जाने के द्वारा हम उस के साथ एक नए सम्बन्ध में आ जाते है। पद 12 में, पौलुस घोषणा की कि ये सत्य हमें परमेश्वर के आत्मा के अनुसार जीवन जीने के लिए बाध्य करते हैं न कि शरीर के अनुसार जीवन के लिए। हम आत्मा के अनुसार चलते हैं जब हम अपने मन को आत्मा की बातों, और जो बाते हम को जीवन प्रदान करती है, और हमारे अन्दर शांति लाती है उन पर केंद्रित करते हैं, नाकि शरीर की बातों पर जो मृत्यु को लाती है। सत्य यह है कि आत्मा हमारे जीवन की अगुवाई करने में सक्षम है, वह इस की पुष्टि करता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं और जब हम उनकी अगुवाई का अनुसरण करते हैं, और उस को अनुमति प्रदान करते है की अह हमारे अन्दर अपने कार्य को पूरा करे वह हम को सक्षम बनता है की और उन्हें अपने काम को पूरा करने की अनुमति देते हैं। निश्चित ही, हम अपनी स्वयं इच्छाओं की अगुवाई में चलने के द्वारा हम परमेश्वर की आत्मा को शोकित और बुझा हैं (इफिसियों 4:30 और 1थिस्लुनिकियो 5:19), परन्तु फिर भी आत्मा जो हमारे अन्दर रहता है और निरंतर बोलता रहता है। यह इस को प्रमाणित

करता है कि परमेश्वर हमारा पिता है और वह हम से इतना प्रेम करता है कि वह हम को कभी भी अपनी उपस्थिति से अलग नहीं करेगा (पद 16)।

इन वर्तमान शरीरो में निवास करना एक बोझ है। पापमय प्रलोभनों से लड़ना आसान नहीं है। परीक्षाओ और उत्पीड़न का समय को सहन करना दर्दनाक और यहां तक कि हतोत्साहित करने वाला भी होता है, परन्तु पौलुस पद 18 में यह घोषणा करता है कि "क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं है।" हम समस्त सृष्टि के साथ ही साथ इस की प्रतीक्षा कर रहे है कि एक दिन परमेश्वर इन सभी का छुटकारा करेगा और इन का पुनः निर्माण करेगा (19-22)। ऐसी बहुत सारी बाते है जो हैं हमारे आनंद को चुरा सकती हैं, परन्तु परमेश्वर का प्रेम इन सब से कही अधिक है। हमारा दर्द हमें परमेश्वर की अच्छाई के प्रति अविश्वासी या हमारे प्रति उसकी देखभाल के प्रति प्रश्न खड़ा कर सकता है, परन्तु हमें स्मरण दिलाया जाता है कि हमारा सर्वोत्तम हित परमेश्वर के ह्रदय और उस के हाथों में है। आप उसके प्रेम पर विश्वास करने में कहाँ संघर्ष करते हैं? क्या ह्रदय का दुःख, अन्याय या अनुत्तरित प्रश्न आपको परमेश्वर और उसके प्रेम के प्रति आप को संदेह से भर देता हैं? आप उस से अपने ह्रदय के उन स्थानों को भरने के लिए कहे, वह चंगा करने वाला है और आप के लिए प्रार्थना करता है!

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 8: अध्याय 9

विषय वाक्य: परमेश्वर अपनी सर्भौमिक इच्छा से लोगो को स्वयं के लिए चुनता है

दिन 1

रोमियों 9:1-5 पढ़े

1. जब पौलुस सुसमाचार के प्रति इस्राइल की प्रतिक्रिया के विषय में सोचता है उस समय उस के जो भाव थे उस का वर्णन कीजिये

2. यशायाह 53:6-8 के अनुसार, हमारे प्रति यीशु जो जो प्रेम है यह उस से किस प्रकार समान है?

3. परमेश्वर ने जो सौभाग्य(सुविधाए) इस्राइल को दी थी उस की सूचि बनाये?.

4. कौन से सौभाग्य(सुविधाए) और प्रतिज्ञाए आपसे सम्बन्धित है? (इफिसियों 2:14-22 को भी देखे)

5. यदि आप इस्राइल से नहीं आये है तो क्या आप इब्राहीम के वंशजो में से एक है?

6. परमेश्वर ने आप को जो वरदान दिया है उस के लिए उस को धन्यवाद दे

दिन 2

रोमियों 9:6-16 पढ़े

1. परमेश्वर की संतान कौन है?

2. प्रतिज्ञा की संतान कौन है?

3. क्या परमेश्वर न्यायी(सही) है?

4. क्या हम परमेश्वर की दया के अधीन है या स्वयं के मानवीय प्रयासों के अधीन है?

दिन 3

रोमियों 9:17-21 पढ़े

1. परमेश्वर ने फिरोन को अपनी महिमा के लिए किस प्रकार उपयोग किया?

2. कौन कुम्हार है और कौन मिटटी है?

3. परमेश्वर के चरित्र और निर्णयों पर प्रश्न करने के विषय में पौलुस क्या कहता है?

4. क्या आप परमेश्वर को अनुमति प्रदान करेगे की वह आप को अपनी महिमा के लिए उपयोग करे?

दिन 4

रोमियों 9:22-26 पढ़े

1. इन पदों में कौन से शब्द परमेश्वर का वर्णन करते है?

2. होशे किस से कहता है कि परमेश्वर स्वयं के लिए बुलाता है?

3. वह उन (आपको) को किस नाम से पुकारता है?

दिन 5

रोमियों 9:27-33पढ़े

1. बहुत से मनुष्यों में से कौन भूमि के कण और आकाश के तारे है, कितनो का उद्धार होगा?

2. यशायाह 1 के अनुसार, इस्राइल के अस्वीकार करने का वर्णन परमेश्वर किस प्रकार करता है?

3. कौन "ठोकर का पत्थर" है?

4. इस अध्याय में कौन सी प्रतिज्ञाओ का समापन है?

जो कोई परमेश्वर को पुकारता है परमेश्वर उस को नए जीवन की आशीष देने के लिए तैयार है

दिन 6

पाठ 8: "सौभाग्य और प्रतिज्ञाओं के लोग एक उद्देश्य के लिए जीवन जीते है "

पद्यांश	रोमियों 9
कुंजीपद	यशायाह 55:8 "मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।"
विषय वाक्य	परमेश्वर अपनी सर्भौमिक इच्छा से लोगो को स्वयं के लिए चुनता है
जीवन सिद्धांत	जो कोई परमेश्वर को पुकारता है परमेश्वर उस को नए जीवन की आशीष देने के लिए तैयार है

सारांश: पौलुस एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर इस अध्याय नौ में देता है। "मैं मसीह की देह का भाग क्यों हूं और कोई और दूसरा क्यों नहीं है?" वह दुख और शोक व्यक्त के साथ इस का प्रारंभ करता है और परमेश्वर की संप्रभुता के आश्वासन पर भरोसा रखने के साथ इस का समापन करता है।

पौलुस अपने साथी यहूदियों के लिए अपने भावुक ह्रदय को व्यक्त करता है। वास्तव में, वह इस को व्यक्त करने के लिए इतना अधिक आगे चला जाता है कि वह उन का उद्धार करने के लिए स्वेच्छा से अपने उद्धार को भी त्यागने के लिए तैयार है (9: 3)। पौलुस अपने इस कथन को अतिरंजित नहीं कर रहा है, क्योंकि वह बार-बार अपने साथी यहूदियों (2 कुरिन्थियों 1: 24-25) के हाथों अस्वीकृति, बदनाम, दोषारोपण और मारपीट का सामना करता आ रहा है। उसने यह सब इसलिए किया क्योंकि वह चाहता था कि वे परमेश्वर की योजना और प्रतिज्ञाओ में अपना स्थान को देख सके। यह प्रेम का कितना अद्भुत उदाहरण है जिस को केवल परमेश्वर ही दे सकता है, कि हम अपने शत्रुओ और उन लोगों से प्रेम करे जो हमें चोट पहुँचाते हैं। यह प्रेम स्वाभाविक रूप से उत्पन्न नहीं होता है। यह परमेश्वर की ओर से एक स्वर्गीय वरदान है। उन लोगो के ह्रदय परिवर्तन के लिए प्रार्थना करना जिन लोगो ने आप को चोट पहुंचाई हो। परमेश्वर हमारे घावों को चंगा करने वाला परमेश्वर है हैं।

पद 4-5 में पौलुस बहुत सारी आशीषों का नाम बताता है जो एक यहूदी व्यक्ति के साथ आई थीं। जब परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से बचाया, तब इस्राएल के लोग परमेश्वर की लेपालक प्रजा बन गई थी। इस्राएल को वाचाएँ मिलीं जिसमें यहोवा ने उन का छुटकारा प्रदान करने का वचन दिया। परमेश्वर ने अपने लोगों को सीने पर्वत पर अपनी व्यवस्था प्रदान की थी और मूसा की व्यवस्था मे उस ने आराधना करने की विधि प्रदान की थी, और उन को अपनी प्रतिज्ञाए प्रदान की थी। फिर भी, पौलुस इस को स्पष्ट करता है कि इब्राहीम की सभी संतान परमेश्वर की संतान नहीं है , परन्तु केवल वही संतान है जिन्होंने प्रतिज्ञाओ पर विश्वास करके नए जन्म को प्राप्त किया है । " शरीर की संतान " हैं, अब्राहम अनुवांशिक संतान (यहूदी) और "प्रतिज्ञा की संतान" जो यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा परमेश्वर के ऊपर भरोसा करते है (9: 6-8)।

पद 9: 9-29 में, पौलुस बहुत ही कठिन संदेश को प्रस्तुत करता है। परमेश्वर न्यायी है और वह लंबे समय तक धैर्य रख सकता है और एक व्यक्ति के ऊपर दूसरे व्यक्ति को वरीयता देता है (पद 22)। " सो वह जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर देता है।" (9:18) उसने एसाव के स्थान पर याकूब को चुना। उसने फिरौन का ह्रदय कठोर कर दिया। और, हालाँकि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को पृथ्वी के सभी जातियों में से चुना था कि वह उसके अनुग्रह और सुसमाचार को इस संसार तक पहुंचाएं, परन्तु उस ने उन में से सभी को उद्धार के लिए नहीं चुना था। " कि चाहे इस्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बारबर हो, तौभी उन में से थोड़े ही बचेंगे।।" (9:27) इन शब्दों को समझना कठिन है, परन्तु एक बात है जिस को हम जानते और समझते हैं, कि परमेश्वर अपनी सृष्टि पर प्रभुतापूर्वक राज्य करता है। इस अध्याय में कई बार कहा गया है, "मेरे पास होगा ..." हमें यह स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर राजाओं और ह्रदयों पर नियंत्रण रखता हैं। हम परमेश्वर से प्रश्न नहीं कर सकते क्योंकि सृष्टि की हुई वस्तु अपने सृष्टिकर्ता से यह प्रश्न नहीं कर सकती कि प्रत्येक को उस ने किस प्रकार बनाया है। (यिर्मयाह18:1-6) यह अध्याय एक चेतावनी के साथ समाप्त होता है कि हम उन यहूदियों के समान न बने जिन्होंने यीशु के कारण ठोकर को खाया था । और वह अपने विश्वास के आधार पर, अपने कर्मो के और अपनी धार्मिक तंत्र

के द्वारा उद्धार प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे । हम भी उन यहूदियों के समान बन सकते है , हम उन बातो के कारण ठोकर खा सकते हैं जो अच्छी लगती हैं या अपने आप को अन्य धार्मिक बंधनों में बांध सकते है जिस के कारण यीशु की सुंदरता और सादगी को जानने की दृष्टि खो जाती हैं। यीशु अपने दिनों में धार्मिक तंत्र के प्रति आक्रामक था और आज भी वह आक्रामक है। इस कारण से, यीशु कहता हैं कि हमें एक बालक के समान उस के पास जाना चाहिए और यह कठिन नहीं है। वह उन लोगो को निर्बल और मूर्खतापूर्ण प्रतीत हो सकता है जिन्होंने ज्ञान और सामर्थ को अपने लिए मूर्ति बना लिया हैं। केवल वही लोग जिनकी रक्षा करने के लिए उन के पास कोई मूर्ति नहीं है और उन्होंने स्वयं की भी मूर्ति नहीं बने है जिस से वह अपेक्षा करते है कि वह उन की रक्षा करेगी केवल वाही सुसमाचार के प्रति खुले हुए और उस को ग्रहण शील है। संदेश कभी भी किसी की मानसिकता या पूर्वाग्रहों को समायोजित करने के लिए नहीं बदला जाता है। कुछ लोग सत्य के कारण ठोकर खाएंगे, परन्तु सत्य के विषय में बताना हमारा कार्य है । (II तीमुथियुस 2: 23-26) आइए हम एक कदम बढ़ाएँ और आत्मा को ह्रदयो में स्वतंत्रता के साथ चलने दे कि लोग परमेश्वर की सामर्थ को देख सके ।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 8: अध्याय 10-11

विषय वाक्य : परमेश्वर इस्राइल की अस्वीकृति के अन्दर भी एक अवशेष को सुरक्षित करता है।

दिन 1

रोमियों 10:1-11 पढ़े

1. पौलुस क्यों यहूदी विचारों को समझता था? (गालातियों 1:13-17)
2. कौन व्यवस्था के समापन और उस की मांग को समाप्त करने के लिए आया (पद 4)
3. हम परमेश्वर के पास अन्दर से और बाहर से किस प्रकार आते है (पद 9-10 पढ़े)
4. "यीशु प्रभु है" यह कहने का क्या अर्थ है (यूहन्ना 8:58 और 10:30 भी देखे)
5. पद 11 मे कौन सी प्रतिज्ञाए दी गई है?

दिन 2

रोमियों 10:12-18 पढ़े

1. क्या परमेश्वर का प्रेम समस्त मनुष्यों के लिए है? हम इस को किस प्रकार इस को जानते है?
2. दूसरों को परमेश्वर के पास ले कर आने के लिए पौलुस कौन से चार चरणों को बताता है?
3. यह पद आप को सुसमाचार सुनाने के लिए किस प्रकार प्रेरित करता है?
4. सुसमाचार के सन्देश को कितनी दूर तक ले जाने की मंशा रखी गई है?

दिन 3

रोमियों 10:19-21 पढ़े

1. क्या इस्राइल ने सन्देश को सुना और सन्देश को समझा था?
2. हम सभी के लिए परमेश्वर के कार्य कहाँ पर प्रदर्शित होते है? (भजन 19:1-4)
3. कौन से लोग थे जो परमेश्वर को नहीं खोज रहे थे परन्तु उन्होने उन को पा लिया?
4. परमेश्वर इस्राइल के पास किस प्रकार पहुंचा?
5. इस्राइल की प्रक्रिया क्या थी?

6. क्या यह संभव है कि कोई धार्मिक व्यक्ति हो परन्तु गलत विश्वास को थामे हुआ हो?

दिन 4

रोमियों 11:1-8 पढ़े

1. क्या परमेश्वर ने इस्राइल को त्याग दिया?

2. वह कौन से उदाहरण है जिन को पौलुस यह प्रदर्शित करने के लिए देता है कि परमेश्वर ने इस्राइल को त्यागा नहीं है?

3. 1 राजा 19:9-18 के अनुसार, एलियाह की क्या शिकायत थी?

4. क्या आप के जीवन में भी कभी इस प्रकार के समय आये है जिन में आप एलियाह के समान ही अनुभव करते हो?

5. कभी कभी हम को परमेश्वर के दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है! (देखे 55:8 पढ़े)

दिन 5

रोमियों 11:9-36 पढ़े

1. किन लोगों को तोड़ा गया था?

2. किन लोगों को जोड़ गया था?

3. पद 20 के अनुसार, इस्राइल को क्यों तोड़ा गया?

4. पद 25 के अनुसार कौन सा भेद है

5. छुटकारा देने वाला कहाँ से आयेगा?

6. इन पदों में परमेश्वर के कौन से चारित्रिक गुण का वर्णन है जो आप को सबसे अधिक विश्राम प्रदान करते है?

परमेश्वर के पास आने का एक मात्र मार्ग परमेश्वर के मार्ग है!

दिन 6

पाठ 9: "इस्राइल का वर्तमान त्याग अन्य के लिए छुटकारे को लेकर आया "

पद्यांश	रोमियो 10-11
कुंजी पद	रोमियों 11:33, "आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!"
विषवाक्य	परमेश्वर इस्राइल के त्याग में भी एक अवशेष को सुरक्षित करता है।
जीवन सिद्धन्त	परमेश्वर के पास आने का एक मात्र मार्ग परमेश्वर के मार्ग है!

सारांश: अध्याय नौ में परमेश्वर की संप्रभुता पर ध्यान केंद्रित करने के पश्चत, हम अध्याय 10 में मनुष्य के उत्तरदायित्व को देखते हैं। इस्राइल ने मसीह को अस्वीकार कर दिया, यीशु मसीह। हालाँकि मसीह के सुसमाचार उस के व्यक्तित्व और कार्यों के द्वारा स्पष्ट रूप से इस्राइल के समक्ष प्रस्तुत किये गए थे, उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया और स्वयं की धार्मिकता के पीछे चलते रहे। परन्तु , उद्धार केवल मसीह के प्रति हृदय परिवर्तन के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है(पद 9-10)। इस्राइल की झूठी धार्मिकता और मसीह को अस्वीकार करने के पाप के बावजूद,परमेश्वर कुछ अद्भुत और नवीन प्रस्तुत करता है। जो लोग परमेश्वर से अनिभिज्ञ थे और बिना आशा के थे परमेश्वर उन को अपने पास बुलाता है। (इफिसियों 2: 11-19) जो अन्यजाती के लोग बहुत समय पहले ही परमेश्वर के हृदय में थे उन के समक्ष परमेश्वर बहुत हुई विशाल द्वार खोल देता है (व्यवस्थाविवरण 30:14)। परमेश्वर के लिए, यहूदियों और अन्यजातियों में कोई भेद नहीं है। पद 11-13 में 'प्रत्येक' और 'सब' शब्दों को बार-बार दोहराया जाता है। कोई विशेष समूह नहीं हैं। परमेश्वर संसार के सभी लोगो को सम्मलित करता है। "जो कोई भी प्रभु का नाम लेगा वह उद्धर पायेगा " (पद 13)।

पद 14-15 में प्रारम्भ से, पौलुस उन घटनाओं की श्रृंखला की व्याख्या करने के लिए तर्क पूर्ण प्रश्नों की एक श्रृंखला का उपयोग करता है, जो किसी भी व्यक्ति को उद्धार तक ले कर जाते । इन पदों का तर्क सुस्पष्ट है: (1) लोग यीशु को तभी उद्धार करने के लिए पुकारेगे जब वह उस पर विश्वास करेगे की वह उन का उद्धार कर सकता है;(2) बगैर मसीह के ज्ञान के उस पर विश्वास करने का कोई अस्तित्व नहीं होता है (3) एक व्यक्ति तभी सुसमाचार को सुन सकता है जब कोई उस को सुसमाचार को सुनाये; (4) कोई भी व्यक्ति तब तक सुसमाचार की धोषणा नहीं कर सकता है जब तक परमेश्वर उस को एसा करने के लिए नहीं भेजे। और यह स्वयं मसीह है जो इस्राइल के उद्धार के सुसमाचार को प्रस्तुत करने के लिए आया परन्तु उन्होंने उस को अस्वीकार कर दिया। उस पर विश्वास न करने का कोई बहाना उन के पास नहीं था। "परन्तु इस्राएल के विषय में वह यह कहता है कि मैं सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा न मानने वाली और विवाद करने वाली प्रजा की ओर पसारे रहा" (पद 21)।

हमें अपने हृदयों की जांच करनी चाहिए। यद्यपि यह शिक्षा इस्राइल के लिए प्रस्तुत की गई है, परन्तु हम को भी किसी चेतावनी और अंतर्दृष्टि के लिए जाँच करनी होगी जोकि आजकल के जीवन में हम पर लागू होती है। इस्राइल व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के पास आना चाहता था, परन्तु यह असंभव था, परमेश्वर की व्यवस्था और आज्ञाए वह परमेश्वर के मानक है जिन का पालन करना मनुष्य के लिए असंभव है। यह हम पर हमारे

पापों को प्रकट करता है और इस को प्रदर्शित करता है की हम अपने पापों के कारण परमेश्वर से कितने दूर है । परमेश्वर के पास आने उर उस को पिता से समुचित अधिकार प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग मसीह पर विश्वास करने के द्वारा है । क्या आप मसीह के कार्य को अस्वीकार कर रहे हैं और स्वयं धार्मिकता का अर्जित करने का प्रयास कर रहे हैं?

सुसमाचार आपके पास किस प्रकार पहुंचा? परमेश्वर स्वयं के सत्य ज्ञान को प्रदान करने के लिए लोगो का उपयोग करता है। एक बार जब आप संदेश सुन लेते है, उस के पश्चात् आप को उस को प्रभु और स्वामी के रूप मे अंगीकार करना आवश्यक होता है, आप को अपने ह्रदय से इस पर विश्वास करना चाहिये कि यीशु को मृतकों में से जी उठा और उस के पश्चात वह उद्धार को प्राप्त करेगे। उन के जीवन मे परिवर्तन आयेगा जो एक समय परमेश्वर विहीन हो कर समय व्यतीत करते थे अब वह परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करते है, उन के जीवन में परिवर्तन होगा जिस को सभी लोग देख पायेगे। यह महान परिवर्तन पौलुस के जीवन में हुआ था (प्रेरितों के काम 9)। इस जीवन और ह्रदय परिवर्तन के परिणामस्वरूप, पौलुस इस पृथ्वी के छोर तक सुसमाचार फैलाने के लिए उत्साहित हो गया। "उन के पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।" (पद 15)। काश परमेश्वर आप के जीवन के अनपेक्षित क्षणों में आपके जीवन का उपयोग करे, वह इस को खोये हुओं को सुसमाचार सुनने और अपने पास लेन के लिए उपयोग करे ।

अध्याय 11 में, पौलुस इस्राइल के भूत, वर्तमान और भविष्य को विभाजित किया है। उन का भूतकाल परमेश्वर के कार्यो और प्रतिज्ञाओ से भरपूर था, जिसकी परिणति मसीह को भेजने के द्वारा हुई। (9: 4-5) परन्तु उन होने मसीह को अस्वीकार कर (पद5 के अनुसार मात्र एक अवशेष को छोड़कर)। अपने अविश्वास के परिणामस्वरूप अब इस्राइल को कठोर, अंधकार और अंधे के रूप में सम्बोधित किया गया है(10 पद)। परन्तु परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओ के प्रति विश्वासयोग्य है। वह अपनी प्रतिज्ञाओ को बनाये रखेगा। उन की परमेश्वर की भलाई में प्रवेश करने की यह अस्वीकृति और अनिच्छा, अन्यजातियों के लिए अवसर लेकर आती है (पद 12)। परमेश्वर के अनुग्रह का भेद पद 25-37 में प्रकट होता है जैसा की हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह सभी लोगो के लिए उद्धार के मार्ग को खोलता है । परमेश्वर इस संसार से प्रेम करता है और अपने पुत्र के बलिदान के द्वारा उस ने हमें अपने परिवार में सम्मलित करने का वरदान प्रदान किया, वह "अदृश्य परमेश्वर की दृश्यमान अभिव्यक्ति" है। कुलुस्सियों 1:15। परन्तु इस्राइल राष्ट्र अभी भी परमेश्वर के हाथों में है। और उस ने एक अवशेष को बचाए रखा है!

पद में 18-20 अन्यजाती विश्वासियों को अभिमान के विरुद्ध चेतावनी देता है, क्योंकि उन का उद्धार परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा के कारण है ना कि उन के किसी भले कार्यो के कारण। ताकि अन्यजाती इस गर्व के कारण परीक्षा में न पड़े, परमेश्वर ने जैतून के वृक्ष से यहूदी शाखाओं को हटा दिया और उन के स्थान पर उन को उस में जोड़ दिया । परन्तु इस कारण से उन को भयभीत और भयाकांत होना चाहिए और उस का आदर और सम्मान करना चाहिए। जब उसने यहूदियों को हटा दिया गया क्योंकि उस पर विश्वास करने में असफल रहे तो अन्यजाती केवल उस पर विश्वास करने के द्वारा उस में बनी रहेगी। परमेश्वर उस किसी भी व्यक्ति को छोड़ेगा नहीं जो उस पर निरंतर विश्वास करने मे असफल हो जाता है, चाहे वह यहूदी हों या अन्यजाति। जो परमेश्वर ने किया है और निरंतर करता है काश उस पर आश्चर्य करते हुए अपने जीवन को व्यतीत करे। समस्त सृष्टि में उस की महिमा को प्रदर्शित करना हमारा उद्धेश्य है। आप इस सप्ताह उस को महिमा प्रदान करने के उद्देश्य से कौन से कदम बढ़ा सकते हैं?

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 10: अध्याय 12

विषय वाक्य : हम इस संसार में परमेश्वर की उपस्थिति को परिवर्तित होने , प्रेम करने, जीवन जीने के लिए मसीह के देह में एक साथ जोड़े गए हैं।

दिन 1

रोमियों 12:1-2पढ़े

1. हम को किस प्रकार का बलिदान परमेश्वर को चढ़ना चाहिए?
2. हम किस प्रकार से नये मनुष्य में परिवर्तित होते है?
3. कौन से तीन शब्द है जो परमेश्वर की इच्छा का वर्णन करते है?

दिन 2

रोमियों 12:3-4 पढ़े

1. पौलुस हम को क्या चेतावनी देता है?
2. यह मसीह की देह में क्यों महत्वपूर्ण है?
3. क्या आप के जीवन में कोई ऐसा क्षेत्र है जिस में आप स्वयं को सबसे अधिक ऊचा समझने की परीक्षा में पड़ सकते है?

दिन 3

रोमियों 12:5-8 पढ़े

1. मसीह की देह के सभी सदस्य किस के है?
2. इस पद्यांश और साथ ही साथ 1 कुरिन्थियों12 में जो वरदान दिए गए है उन की सूची बनाये?
3. आप क्यों सोचते है कि जो सबसे कमजोर और कम महत्वपूर्ण वरदान की सबसे अधिक आवश्यकता होती है (1 कुरिन्थियों 12:21-27 को भी देखे?
4. पद 6 के अनुसार , हमारे वरदान क्यों इतने भिन्न है?
5. इफिसियों 4:11-13 के अनुसार, आत्मिक वरदानो का उद्धेश्य क्या है?

दिन 4

रोमियों 12:9-16 पढ़े

1. जो अलौकिक प्रेम एक दूसरे के लिए हमारे पास है उस का वर्णन करे?

2. इस असम्भव प्रेम को प्रदर्शित करने में हमारी सहायता कौन कर सकता है?

3. आप क्यों सोचते है कि पौलुस निम्न स्थिति के लोगों के साथ जुड़ने के लिए कहते हैं?

4. क्याआप सोचते है कि एक मसीह के जीवन में परिक्षये और परखें एक सामान्य बात है? (2 तीमुथियुस *3:12* को भी देखे)

5. याकूब *1:2-4* धीरज के विषय में क्या कहता है?

दिन 5

रोमियों12:17-21 पढ़े

1. पद 17-18 के अनुसार , जब हम इस संसार मे जीवन व्यतीत कर रहे है तव हमारे पास किस प्रकार का व्यवहार और दृष्टिकोण होना चाहिए?

2. हमें बदला क्यों नहीं लेना चाहिए?

3. हमें अपने शत्रुओ के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए?

4. आप के जीवन में प्रेम का वह कौन सा सबसे क्षेत्र है जिसका अनुपालन करना आपके लिए सबसे अधिक कठिन है?

5. परमेश्वर से आप मागे कि वह आप की सहायता करे कि आप उस के दयामय प्रेम को प्रदर्शित कर सके

परमेश्वर का प्रेम बलिदानपूर्ण है

दिन 6

पाठ 10: "जीवता बलिदान "

पद्यांश	रोमियों 12
कुंजी पद	रोमियों 12:1-2 "इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। 2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।
विषय वाक्य	हम इस संसार में परमेश्वर की उपस्थिति को परिवर्तित होने , प्रेम करने, जीवन जीने के लिए मसीह के देह में एक साथ जोड़े गए हैं।
जीवन सिद्धांत	*परमेश्वर का प्रेम बलिदानपूर्ण है*

सारांश: पौलुस बहुत हियाव के साथ अपने पाठकों से निवदन करता है कि वे अपने जीवनों को परमेश्वर के समक्ष जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करे। एक जीवित बलिदान? यह वही है जिस के विषय में 1- 11 अध्याय में कहता आ रहा है और उसके प्रतिस्वरूप हमारा प्रति उत्तर इस ही प्रकार का होना चाहिए। मसीह ने जो कुछ भी हमारे लिए किया है यह उस का विश्वास आधारित प्रतिउत्तर है। जिस प्रकार जो लोग मृतकों में से जीवित हो चुके है, और मसीह के साथ नए जीवन का आनंद ले रहे हैं (6: 4), हमारी आत्मिक आराधना में अपना सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर को समर्पित करना सम्मलित होता है। अपना धन, समय, प्रतिभा, सेवा अदि को परमेश्वर को देना हमारे लिए सरल होता है परन्तु स्वय को उस को समर्पित करना चुनौतिपूर्ण और अत्यधिक बलिदान पूर्ण होता है। परन्तु क्या परमेश्वर इस योग्य नहीं है कि हम अपने हाथों, अपनी जीभ, अपने मन को उस को समर्पित कर सके है? अपने शरीर के प्रत्येक अंग को प्रतिदिन परमेश्वर के सन्मुख समर्पित करे। इस समर्पण में संसार के उन मूल्यों से प्रथक होना भी सम्मलित होता है जो नित्य हम को हराते रहते है।

जब हम अपने आप को परमेश्वर के सन्मुख समर्पित करते है, हम संसार के मूल्यों से अलग हो जाते है और दूसरों की सेवा करते है, यह परमेश्वर के प्रेम का बाहरी अभिव्यक्ति है। संसार की रीति के अनुरूप होने के स्थान पर, हमें परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए परिवर्तित होते जाते है। I यूहन्ना 2: 15-17 हमें स्मरण करता है कि शत्रु इस लिए हमारे विरुद्ध मे आता है कि वह हम को इस संसार की सोच और रीति से दबा दे। इस प्रकार, हमारे मष्तिस्क में नवीनीकरण का एक युद्ध प्रारम्भ हो जाता है। इस कारण हम को उस के वचन में बने रहना चाहिए, ताकि परमेश्वर हमारे ह्रदय और मष्तिस्क से बातें करे।

जीवित बलिदान के अपने इस विचार को पौलुस जारी रखता है, पौलुस देह के वरदानो का वर्णन करता है। पवित्र आत्मा मसीह के देह में उपयोग करने के लिए प्रत्येक विश्वासी को वरदानों से सुसज्जित करता है। इन वरदानो की सूची आप को अन्य पत्रियों मे भी प्राप्त होती है। 1 कुरिन्थियों 13 और इफिसियों 4:11 भी कुछ वरदानों का विवरण प्रस्तुत किया गया देते हैं, परन्तु हम उन विविध वरदानों को कोई नाम नहीं दे

सकते है जो वहां पर प्रस्तुत किये गए है और ना ही यह बता सकते है कि वह किस प्रकार से एक दूसरे से भिन्न दिखाई देते है और उन का किस प्रकार उपयोग होता है। वे बहुत भिन्न उस से पूर्ण रूप से भिन्न हो सकते है। कुछ वरदान दूसरे वरदानों की अपेक्षा अधिक द्रश्य रूप मे प्रकट होते है और उन को देखा जा सकता है परन्तु अन्य वरदान भी इस संसार मे परमेश्वर का कार्य अत्यंत आवश्यक होते है । हमारा उत्तरदायित्व है कि हम उसकी महिमा के लिए इस संसार में जो कुछ भी कर रहे है उस को पूर्ण करने के लिए उस के द्वारा प्रदान वरदानों का उपयोग करें।

यह कितना रुचिकर है कि वास्तविक प्रेम इन वरदानों जिन की सूची दी गई है उन का अनुसरण करता है! किस प्रकार प्रेम को व्यवहार और संबंधों में अभ्यास रूप में लाया जाता है, यह पवित्र आत्मा के कार्य के बिना असंभव है। सम्बन्धो ने अन्दर प्रेम, समुदाय के प्रति प्रेम, शत्रुओं के प्रति प्रेम इस को विकसित करना चाहिए क्योंकि हम परमेश्वर के वचन और उस की आत्मा से जुड़े हुए हैं। वह इस की अभिलाशा करता है कि वह आप को यीशु मसीह के स्वरूप में आकार प्रदान करना चाहता है। यह प्रेम एक परिवर्तन एजेंट के सामान है क्योकि अन्य लोग आप के जीवन में और आप के द्वारा यीशु के अलौकिक और असम्भव प्रेम के गवाह बनेगे हैं। यीशु कहता है की प्रेम उस के चेलो का चिन्ह होगा(यूहन्ना 13: 34-35)। क्या यह एक चिन्ह आप को दूसरों से अलग करता है है ?

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 11: अध्याय 13

विषय वाक्य : हमारा उत्तरदायित्व है की हम प्रेम को अनुमति प्रदान करे की हम को आकार दे और हमारे व्यवहार के द्वारा प्रकट हो .

दिन 1

रोमियों 13:1-2 पढ़े

1. यह पद्यांश सांसारिक अधिकारीयों और परमेश्वर के मध्य जो सम्बन्ध है उस के विषय में क्या शिक्षा प्रदान करता है?

2. यदि हम संसार के अधिकारियों का विरोध करते है तो हम किस का विरोध करते है?

3. जिन लोगो के पास अधिकार है उन के प्रति हमारा उत्तरदायित्व और प्रतिउत्तर किस प्रकार का होना चाहिए?

4. 1तीमुथियुस 2:1-4 से हम क्या सीख सकते है?

दिन 2

रोमियों 13:3-4 पढ़े

1. पद 1-4 में आप परमेश्वर के कौन से गुणों को पाते है?

2. हम को अधिकारीयों का क्यों भय मानना चाहिए?

3. कौन सी परिस्थितियों की आवश्यकता होगी जिसमें एक मसीह सांसारिक अधिकारियों की आज्ञा उल्लंघन कर सकते है? (भजन 2:1-3 और प्रेरितों के काम 5:27-29 को भी देखे)

4. मानवीय सरकार का उद्देश्य क्या है?

5. मानवीय सरकारों का बल पूर्वक कानून को लागु करने के अधिकारों का पौलुस किस प्रकार समर्थन करता है?

दिन 3

रोमियों 13:5-7 पढ़े

1. किन कारणों से हमें अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए?

2. अधिकारियों के प्रति अधीनता के विषय में 1 पतरस 2:11-16 क्या कहता है?

3. हमारे अधिकार किस की सेवा करते है और एक विश्वासी के रूप में यह हम किस प्रकार से प्रभावित करता है?

4. कर चुकाने के विषय में यह पद्यांश क्या कहते है?

दिन 4

रोमियों 13:8-10 पढ़े

1. हम दूसरों के प्रति और परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को किस प्रकार प्रदर्शित करते है?

2. क्या पौलुस ने व्यवस्था को नकारात्मक रूप से या सकारात्मक रूप से वर्णित किया है?

3. किस प्रकार से अपने पडोसी से प्रेम का व्यवस्था का सार है ?

दिन 5

रोमियों 13:11-14 पढ़े

1. इन पदों के अनुसार, इस समय कौन सा समय है ?

2. अंधकार और रात बाइबिल मे पाप और दुष्टता को प्रदर्शित करती है, एक विश्वासी के रूप में हम को क्या धारण करना चाहिए? (इफिसियों 6:11, 1 थिस्लुनिकियो 5:8)

3. यूहन्ना 1:1-5; 9:4-5, और 1यूहन्ना 1:5-7 को देखे, उजियाले का सोत्र कौन है और यह इस संसार को किस प्रकार प्रभावित करता है?

4. इस संसार में परमेश्वर के उजियाले को प्रदर्शित करके आप परमेश्वर का सम्मान किस प्रकार कर सकते है?

क्योकि परमेश्वर हम से प्रेम करता है इस लिए हम भी दूसरों से प्रेम कर सकते है और इस अंधकारमय संसार में उजियाला बन सकते है

दिन 6

पाठ 11: "सार्वजिनिक अधिकारियो के प्रति हमारा उत्तरदायित्व "

पद्यांश	रोमियों 13
कुंजी पद	रोमियों 13:14 " वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाशाओं को पूरा करने का उपाय न करो।"
विषय वाक्य	हमारा उत्तरदायित्व है की हम प्रेम को अनुमति प्रदान करे की हम को आकार दे और हमारे व्यवहार के द्वारा प्रकट हो
जीवन सिद्धन्त	क्योकि परमेश्वर हम से प्रेम करता है इस लिए हम भी दूसरों से प्रेम कर सकते है और इस अंधकारमय संसार में उजियाला बन सकते है

सारांश: अध्याय 13 दो तथ्यों के विषय में बताता है। सार्वजनिक अधिकार के प्रति हमारा उत्तरदायित्व और प्रेम को अपने व्यवहार को आकार प्रदान करने के लिए हमारा उत्तरदायित्व।

हम यह सीखते हैं कि परमेश्वर की अनुमति के बिना कोई भी सरकारी अधिकार का अस्तित्व नहीं हो सकता है। जब हम मानवीय अधिकार का विरोध करते हैं, तब हम परमेश्वर के अधिकार का विरोध करते हैं। परमेश्वर के अनुयायियों के कारण हम को अधिकारियो के प्रति सम्मान भाव का दृष्टिकोण रखना चाहिए। इस का एकमात्र अपवाद पद 5 में पाया जाता है, जब विश्वास के तथ्य पर सांसारिक अधिकारियों ने स्वर्गीय अधिकार के विषय में मतभेद। पतरस और यूहन्ना के विषय में इस तथ्य को हम प्रेरितों के काम 5:29 में देखते हैं, " कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य है। "

जब आप यीशु के पीछे चलने लगते है, तब आप को यह ज्ञात होगा कि आप के सभी सम्बन्ध परिवर्तित हो गए है। पहले आप स्वयं के लाभ से प्रेरित होते थे परन्तु हम दूसरों के प्रति प्रेम और परमेश्वर के प्रति एक स्वस्थ भय से प्रेरित होते है। अध्याय बारह के उत्तरार्द्ध इस को प्रदर्शित करता है, जब हम उद्धार के द्वारा मसीह के साथ जुड़ जाते है, तब हम मसीह के "देह" के रूप में अन्य विश्वासियों के साथ भी जुड़ जाते हैं। फिर अध्याय बारह के अंतिम भाग और अध्याय तेरह में, वह कहता है कि सरकारी की शक्तियों, सामान्य रूप से मानव जाति के लिए, और समस्त समुदाय के साथ हमारे सम्बन्ध परिवर्तित हो जाते है। यहां तक कि हमारे आंतरिक दृष्टिकोण भी परिवर्तित हो जायेगा, जिसको विषय अध्याय चौदह में चर्चा की गई है। मसीह बानने से पहले कमजोरों के प्रति हमारा जो दृष्टिकोण था वह पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जायेगा है। हम उन लोगों की देखभाल करेंगे जो स्वयं की देखभाल नहीं कर सकते (याकूब 1:29)। और(अध्याय पंद्रह) खोया के प्रति हमारा दृष्टिकोण पूर्ण रूप से अलग होगा। उन तक पहुचने के प्रति हम एक ज्वलनशील जनून से भर जायेगे, और उन तक पहुचने के हमारे पास अलग कारण होगा जो पहले हमारे पास कभी भी नहीं था

शायद इन सभी बातों की सबसे अच्छी तरह से अभिव्यक्त जो पतरस ने 1 पतरस 2:17 में कहा है उस से की जा सकती है, 1 पतरस 2:17 में कहता है, " सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।।"

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 12: अध्याय 14

विषय वाक्य: सीढ़ी के पत्थर के सामान , हम दूसरों के साथ मेलमिलाप को खोजते हैं और परमेश्वर से दृष्टिकोण रखते हैं

दिन 1

रोमियों 14:1-4 और 1 कुरिन्थियों 8:1-11 को पढ़े

1. कमजोर भाई कौन है?
2. इस पद्यांश के अनुसार, जो लोग विश्वास में कमजोर है उन के प्रति हमें किस प्रकार का व्यवहार करनी चाहिए?
3. रोमियों 14:3 के अनुसार, परमेश्वर उन के साथ किस प्रकार का व्यवहार करता है?
4. कौन दूसरों पर दोष लगाने की स्थिति मे नहीं है?
5. यदि दूसरों के प्रति आप के प्रेम के बीच में दोषारोपण आ जाता है, तो परमेश्वर से अपने ह्रदय और व्यवहार को परिवर्तित करने के लिए कहे.

दिन 2

रोमियों 14:4-8 पढ़े

1. हमें क्यों दूसरों पर दोष नहीं लगाना चाहिए? (मत्ती 7:1-5 को भी देखे)
2. हम में से प्रत्येक किस के प्रति उत्तरदायी है?
3. आप जो विश्वास करते है और जो आप करते है उन के प्रति पूर्ण रूप से सहमत होने के लिए आप किस प्रकार निर्णयों को लेते है? (रोमियों 12:1-2 को भी देखे)
4. किस प्रकार से 1 कुरिन्थियों 12:25 आप के दृष्टिकोण को प्रभवित करता है और जो आप विश्वास करते है उस में सहायता प्रदान करता है ?

दिन 3

रोमियों 14:9-12 पढ़े

1. किस प्रकार से मसीह का मरना और मृतकों में से जी उठने का उदहारण, जिस प्रकार से आप दूसरों के साथ व्यवहार करते है उस को प्रदर्शित करता है

2. हम क्यों दूसरों पर दोष लगाने के प्रलोभन में गिर जाते है? (रोमियों 7:19-20 को भी देखे)

3. मसीह के न्याय सिंहासन के पास क्या होगा?

4. क्या आप इन पदों के साथ सहमत है और उत्साहित है?

दिन 4

रोमियों 14:13-18 पढ़े

1. इन पदों के अनुसार, हम किस प्रकार से परमेश्वर के परिवार के दूसरे सदस्यों को चोट पहुंचाते है

2. आप के वर्तमान दिनों में, दूसरे विश्वासियों के लिए कौन से ठोकर के पत्थर और अवरोध हो सकते है?

3. किस प्रकार से 1कुरिन्थियों 8:4-13 इस विषय में आप की समझ में वृद्धि करता है?

4. प्रेम में चलने के विषय में पद 15 में पौलुस क्या कहता है?

5. क्या किसी को उस के विश्वास के प्रति उस को उत्साहित करना आसन है या हतोत्साहित करना?

दिन 5

रोमियों 14:19-23 पढ़े

1. पद 19 के अनुसार, हमारा लक्ष्य और दायित्व क्या है? (गालतियों 6:1 को भी देखे)

2. हम को परमेश्वर और स्वयं के मध्य क्या रखने की आवश्यकता है?

3. कौन से शब्द पद 13 और पद 21 में दौहराए गए है? यह क्यों इंतना महत्वपूर्ण है

4. किस प्रकार कार्य को करना है इस निर्णय लेने में क्या सहायता करता है? (भजन 119:23-24 याकूब 1:5 को भी देखे)

5. किस प्रकार से इस अध्याय का अंतिम पद समस्त मसीहों पर लागू होता है?

सीढ़ी के पत्थर बने न की ठोकर का पत्थर .

दिन 6

पाठ 12: "ग्रहणशील दृष्टिकोण"

पद्यांश	रोमियों 14
कुंजी पद	रोमियों 14:19, "इसलिए हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।"
विषय वाक्य	कदमों के पत्थर के रूप में, हम दूसरों के साथ मेलमिलाप को खोजते हैं और परमेश्वरसे दृष्टिकोण रखते हैं
जीवन सिद्धन्त	सीढ़ी के पत्थर बने न की ठोकर का पत्थर .

सारांश: हमने अभी तक उन तथ्यों पर ध्यान दिया है जो विश्वास के विश्वासियों के लिए सार्वभौमिक और आवश्यक हैं, परन्तु अध्याय14 उन तथ्यों का वर्णन करता है, जो प्रत्येक विश्वासी में भिन्न होते हैं। पवित्र आत्मा हममें से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से उन बातों को निर्धारित करने में प्रदान करता है, जो व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के साथ वार्तालाप करने और दूसरों की सेवा करने के लिए अत्यधिक आवश्यक होती है। जिस प्रकार से परमेश्वर हमारी अगुवाई करता है , हो सकता है वह दूसरों की अगुवाई बिलकुल भिन्न रूप से कर सकता है। वह हमें कुछ कार्यो को न करने के लिए कह सकता है या उन उन कार्यो को करने के लिए कह सकता है जिन को दुसरे नहीं कर रहे होते है। हमें न इस को सहन करना चाहिए, परन्तु हम को इन भिन्नताओ का सम्मान और सराहना करनी चाहिए।

हम सभी अलग-अलग समय में और भिन्न भिन्न पृष्ठभूमि से परमेश्वर के निकट आते हैं। प्रारंभिक कलीसिया में शिक्षित लोगो के साथ-साथ दास, धनी और गरीब, चुंगी लेने वाले और धार्मिक अगुवें सम्मलित थे, जो सरकार में सम्मलित थे और विद्रोही जो सरकार का विरोध करते थे, यहूदी और अन्यजातियों। परमेश्वर की बुलाहट सम्पूर्ण मानवजाति लिए है और इसलिए जो लोग उसकी बुलाहट का प्रतिउत्तर देते है, वह एक अद्भुत विविधता का प्रतिनिधित्व करते है। इस विविधता में विश्वास और जीवन शैली सम्मलित है जो कि सुसमाचार के लिए आवश्यक नही होती है। उद्धर प्राप्ति के लिए केवल मात्र यह आवश्यक है कि उस के पास सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र की स्पष्ट समझ होनी चाहिए। अन्य विषयों के लिए, पौलुस कहता है हम जो व्यवहार करते है और विश्वास करते है वह अपनी समझ और विवेक के कारण करते है। वह कहता हैं कि वहां पर कमजोर विश्वासी और सामर्थी विश्वासी दोनों होते है परन्तु परमेश्वर दोनों को स्थिर करने में सक्षम है। इस प्रकार से हम सभी परमेश्वर के सन्मुख उत्तरदायी है जो सच्चा और सिद्ध न्यायी है। उस के समक्ष, हमारे वरदान और बलिदान को उस हमारे वास्तविक उद्धेश्यो के प्रकाश में जांचा जायेगा, हमारी सफलता या असफलताएं उनके प्रति सच्ची आज्ञाकारिता और दूसरों के लिए हमारे वास्तविक प्रेम के प्रकाश में देखी जाएगी हैं। परमेश्वर के पास उचित अधिकार है की वह अपने न्याय और सामर्थ का उपयोग करे परन्तु उस के पास यह भी अधिकार है कि वह उन वस्तुओ के प्रति अत्यधिक धीरज को रखे जिन का न्याय किया जाना है... "(रोमियों 9:22)।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण होगा जब वह कहता है कि "विश्वास में कमजोर" उस का अर्थ यह नहीं है की वह विश्वास के द्वरा उद्धार प्राप्त करने के कमजोर है परन्तु उस के पास "ज्ञान" की कमी है (1कुरिन्थियों 8: 9-11)। यह कोई अर्थ नहीं रखता है, हमारे 'कमजोर' भाई-बहन परमेश्वर के हैं और वह उन्हें ग्रहण करता है।

हमें दूसरों को भी सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण के साथ करना चाहिए और उन को उत्साहित करना चाहिए जिस प्रकार यीशु उन को आगे को बढ़ने के लिए करता है। यह पर किसी भी मानवीय निर्णय के लिए कोई स्थान नहीं है और एक दूसरों के विचारों को लेकर हम को झगड़ा नहीं करना चाहिए। हमें दूसरों के प्रति व्यवहार करते समय इस को अपना उत्तरदायित्व के रूप में देखने की आवश्यकता है जिस प्रकार परमेश्वर करता है। परमेश्वर की बुलाहट भाईचारे के लिए है जिस के विषय में यीशु ने यूहन्ना 17:21 में प्रार्थना की थी, "कि वह भी एक हो! " यह परमेश्वर के प्रेम का आश्चर्य कर्म है जो इस अद्भुत एकता को प्राप्त करने के लिए सभी विविधताओं को पार करता है जिस कारण से जो संसार देख रहा है उस को सुसमाचार के प्रति आकर्षित करता है ।

पौलुस एक कदम और आगे जा कर उस मसीह स्वतंत्रता को हतोत्साहित करता है जो साथी विश्वासियो के लिए ठोकर या दुःख पहुचंने का कारण बने, या गवाही के लिए हानिकारक हो, मसीह की देह के लिए हानिकारक हो। शैतान हमें और हमारी गवाही को छोटे विषयों पर विवाद के कारण नष्ट होते हुए देखना पसंद करता है, परन्तु हमारी प्राथमिकता परमेश्वर का राज्य और शांति की खोज की होनी चाहिए। हम किसी के जीवन में परमेश्वर के कार्य को नष्ट नहीं करना चाहते हैं और न ही उनके लिए ठोकर खाने और गिरने का कारण बनना चाहते हैं। यदि जो हम करते है उस के कारण हमारे भाई बहन को दुःख पहुचता है (पद 15) तब हम किसी भी प्रकार से प्रेम में नहीं चल रहे होते है। हमें परमेश्वर के आत्मा के प्रति संवेदनशील रहना सीखें चाहिए, और कमजोरो को उठाने का प्रयास करना चाहिए ना कि उन की आलोचना करनी चाहिए। आप इस सप्ताह मसीह में अपने भाइयों और बहनों को किस प्रकार से निर्मित कर सकते है? आप दूसरों के साथ एकता और उन की स्वतन्त्रता के लिए परमेश्वर की आत्मा से सहायता प्राप्त करने के प्रार्थना करे ताकि आप स्वयं में कुछ परिवर्तन ला सके।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 13: अध्याय 15

विषय वाक्य : निस्वार्थ बलिदान आशा का सन्देश भेजता है

दिन 1

रोमियों 15:1-3 पढ़े

1. नए विश्वासियो के प्रति हमारा दायित्व और उत्तरदायित्व क्या है?
2. प्रभु में जो कमजोर विश्वासी भाई है उन का समर्थन(सहायता) हम किस प्रकार से करेगे?
3. हम किस को प्रसन्न करते है?
4. हमारे व्यवहार के द्वारा परमेश्वर कौन से महान उद्देश्य को हमारे द्वारा और दूसरों के द्वारा पूरा करना चाहता है?
5. फिलिपियों 2:5 और 1यूहन्ना 3:16 के अनुसार , किस प्रकार से यीशु हमारे लिए एक उदहारण है जिस का हम अनुसरण कर सकते है?
6. 1कुरिन्थियों 10:23-24 के अनुसार , हम स्वयं के लाभ के ऊपर हम किस के लाभ को प्राथमिकता प्रदान करते है?
7. आज के दिन आप ने किस विचार पर मनन किया ?

दिन 2

रोमियों 15:4-7 पढ़े

1. पवित्र शास्त्र में हमारे लिए निर्देशों का क्या उद्देश्य है?
2. किस प्रकार से यह पद्यांश हमारी आशा के विषय में बाते करता है? (2कुरिन्थियों4:18, यूहन्ना14:1-4, फिलिपियों 3:20)
3. इन पदों में एकता को परिभाषित करने के कौन से शब्द पाए जाते है?
4. हम किस प्रकार से एक दूसरे का स्वागत करते है ?

दिन 3

रोमियों 15:8-12 पढ़े

1. जब यीशु दास बन गया तब उस ने यहूदियों के मध्य क्या उपलब्धी को प्राप्त किया?

2. जब यीशु दास बन गया तब उस ने अन्यजातीयों के समक्ष क्या प्रदर्शित किया और क्या कार्य पूरा किया?

3. "यीशु की जड़" किस को कहा गया है?

4. परमेश्वर की आशा विश्वासी को किस से भर देती है?

5. आनंद हमारे अन्दर से बाहर निकले इस के लिए हमारे अन्दर कौन कार्य करता है?

6. आप अपने अन्दर और दूसरों के अन्दर इस आनन्द और शांति को प्रदर्शित होते हुए किस प्रकार देख सकते है?

दिन 4

रोमियों 15:14-21 पढ़े

1. कलीसिया को उत्साहित करने के लिए पौलुस किन शब्दों का उपयोग करता है?

2. एक अगुवे के रूप में दूसरों को उत्साहित करने को आप कितना महत्वपूर्ण समझते है? (इब्रानियों 10:24-25 को भी देखे)

3. पौलुस अन्यजाती के लिए अपनी बुलाहट और सुसमाचार के प्रति उन के प्रतिउत्तर का सारांश किस प्रकार प्रस्तुत करता है?

दिन 5

रोमियों 15:14-33 पढ़े

1. पौलुस के जीवन के लिए परमेश्वर की क्या बुलाहट थी? (प्रेरितों के काम9:16 और गलातियों 2:20 को भी देखे)

2. जो परमेश्वर ने उस को करने के लिए कहा था क्या उस ने उस को पूरा किया ?

3. पद 18 में, जो कुछ भी पौलुस ने उपलब्धियां प्राप्त की थी उस का श्रेय उस ने किस को दिया?

4. मसीह के लिए कार्य को पूर्ण करने के लिए पौलुस ने किस प्रकार की कठीनाईयो का सामना उस ने किया? (2 कुरिन्थियों 11: 23-28)

5. आप के जीवन के लिए परमेश्वर की बुलाहट को क्या आप समझते है?

6. क्या आप दूसरों को अपने उद्देश्य को समझा सकते है?

परमेश्वर के द्वारा हमरी बुलाहट हमारे जीवन के उद्देश्य को संतुष्ट कर देती है

<u>दिन 6</u>

पाठ 13: "निस्वार्थ बलिदान आशा के सन्देश को भेजता है "

पद्यांश	रोमियों 15
कुंजी पद	रोमियों 15:4, "जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।"
विषय वाक्य	निस्वार्थ बलिदान आशा के सन्देश को भेजता है
जीवन सिद्धन्त	परमेश्वर के द्वारा हमारी बुलाहट हमारे जीवन के उद्देश्य को संतुष्ट कर देती है

सारांश: पौलुस अध्याय 15 में भी कमजोर और सामर्थी भाइयों की बात जारी रखता है। वह निष्कर्ष निकालता है कि जिन लोगो के मध्य में मतभेद है उन की स्वीकृति उन के मध्य एकता को लेकर आती है। हम को इस लिए नहीं बुलाया गया है कि हम दूसरों की ख़ुशी की कीमत पर स्वयं की प्रसन्नता को नहीं खोजना है वरन दूसरों के लाभ के लिए हम को उन को निर्मित करना है और उन की सेवा करनी है(1कुरिन्थियों 10:33)। हम परमेश्वर की संतान के रूप में उस नैतिक उत्तरदायित्व के साथ जीवन यापन करते है कि जो लोग कमजोर है उस को साथ लेकर चले और उनकी सहायता करे और उन के बोझ को उठाये(गलातियों 6: 2)। यीशु का जीवन निस्वार्थ प्रेम का हमारे लिए उदाहरण है। वह तिरस्कृत और अस्वीकार कर दिया गया, परन्तु फिर भी वह हमारे लिए क्रूस की यात्रा की। हम एक दूसरे के लिए कितनी दूर जाते हैं?

यह अध्याय आशा का है! इस अध्याय में आशा के विषय में चार बार उल्लेख किया गया है। आशा की परिभाषा इब्रानियों 11: 1 से प्राप्त होती है। "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। इस प्रकार की आशा हमें पूर्ण सुरक्षा और आश्वासन प्रदान करती है। परमेश्वर इस आशा का स्रोत और विषय है क्योंकि उसके बिना जीवन आशाहीन है। उस आशा से जुड़ने का एक सबसे उत्तम मार्ग है, समस्त पवित्र शास्त्र में भरा हुआ है। हमें प्रतिदिन उस की आवाज को सुनने के लिए उस के वचन को पढना चाहिए , और उस से सुधार और प्रोत्साहन प्राप्त करना चाहिए जिस के द्वारा एक नई आशा का संचय होता है। यह वह प्रोत्साहन है जिस को संसार नहीं समझ सकता है परन्तु पवित्र आत्मा हम को आशा की सामर्थ

से भर देता है जिसकी हमको उस कार्य को पूर्ण करने में आवश्यकता होती है जिस के लिए उस ने हम को बुलाया है ।

जब मसीह आया, उसने परमेश्वर के सत्य को प्रकट किया, लंबे समय से प्रतीक्षित प्रतिज्ञा को पूर्ण किया, और यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को परमेश्वर की महिमा दिखाई। राष्ट्र हमेशा ही परमेश्वर की योजना में थे। मूसा, भजन 117, और यशायाह सभी लोग इस विविधता के लिए उस के प्रसंसा करते है और जो लोग आनेवाले समयों में यीशु के नाम को पुकारते है उन को वह उस में सम्मलित करता है। पौलुस परमेश्वर का सबसे उपयोगी उपकरणों में से एक था जिसे परमेश्वर सभी राष्ट्रों तक सुसमाचार का संदेश पहुँचाने के लिए उपयोग किया था। उसे जाने और अन्यजातियो को सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया गया । हम अध्याय 15 के अंत में पाते है, वह इस को जनता था की उस का कार्य लगभग समापन पर है। जहाँ पर उस को भेजा गया था वहां पर उस ने सुसमाचार प्रचार का कार्य समाप्त कर लिया है और विश्वास योग्यता के साथ अपने कार्य को समाप्त करने की सामर्थ प्रदान करने के लिए वह परमेश्वर को महिमा प्रदान करता है। वह इस अध्याय का समापन प्रार्थना के साथ करता है की एक साथ प्रयास करे और तरोताजा रहे है। वह उन से भी प्रार्थना करने के लिए कहता है। काश हम भी प्रार्थना के लोग हो, और दूसरों के द्वारा और परमेश्वर के द्वारा नई ताजगी को प्राप्त करे।

रोमियों की पत्री: उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ

पाठ 14: अध्याय 16

विषय वाक्य : बुद्धिमान बने, ध्यान केन्द्रित करे और अच्छी तरह समाप्त करे!

दिन 1

रोमियों 16:1-16 पढ़े

1. इस अध्याय में आई हुई उस स्त्री का नाम बताये और किस प्रकार से पौलुस प्रत्येक की सराहना करता है?

2. कौन से पद पौलुस के मित्रो का वर्णन करते है?

3. आपके जीवन का वर्णन करने के लिए आप किस प्रकार के वर्णन को पसंद करेगे?

दिन 2

रोमियों 16:17-18 पढ़े

1. जब पौलुस अपने पात्र को समाप्त कर रहा था उस समय वह रोमियो को कौन चेतावनियों का स्मरण दिला रहा था?

2. जब लोग सुसमाचार में व्यवधान और विभजन को उत्पन्न करदेते है, तब वह किस की सेवा कर रहे होते है?

3. आप स्वयं के लिए और आपनी कलीसिया के लिए किस प्रकार से प्रार्थना कर सकते है?

दिन 3

रोमियों 16:19-27 पढ़े

1. रोमी किस लिए जाने जाते थे?

2. उस भेद की व्याख्या करे जो एक समय छुपी हुई थी परन्तु अब प्रकट है (इफिसियों 3:3-6 कुलिसियों 1:26-27 को भी देखे)

3. यह प्रकाशन कौन है?

4. इन पदों में परमेश्वर के जो गुण दिए गये है क्या आप उन में से कुछ को बता सकते है ?

5. परमेश्वर क्या है उस पर ध्यान लगाने के लिए कुछ समय व्यतीत करे और उस की स्तुति करे

दिन 4

रोमियों 16:20-27 पढ़े

1. जो एक विश्वासी के रूप में हम और रोमी जिस आत्मिक युद्ध का सामना करते है उस के सम्बन्ध मे पौलुस कौन सी प्रतिज्ञा के विषय में बताता है?

2. इस समय में और भविष्य में यह प्रतिज्ञा किस प्रकार पूर्ण होगी?(प्रकाशितवाक्य 20:10 को भी देखे)

3. राष्ट्रों के प्रति हमारा उत्तरदायित्व क्या है?

4. आप स्वयं के द्वारा इस उत्तरदायित्व में किस प्रकार से भागीदार हो रहे है?

दिन 5

अध्याय 16 का पुनरवलोकन

1. इस पत्र में आप के लिए सबसे अधिक क्या निकल कर आया?

2. आप इस को किस प्रकार से अपने मष्तिष्क मे और अभ्यास में ले कर आयेगे?

3. परमेश्वर की स्तुति हो कि वह कौन है, और उस ने आप के ऊपर क्या प्रकट किया है और आप जानते है कि जो उस ने प्रतिज्ञाए की है उन को पूरा करने में वह विश्वासयोग्य है

प्रत्येक व्यक्ति मूल्यवान है और परमेश्वर के राज्य को अग्रसर करने में उस का सहयोग है !

दिन 6

पाठ 14: "परमेश्वर की योजना हमेशा से राष्ट्रों के लिए थी "

पद्यांश	रोमियों16
कुंजी पद	रोमियों 16:19, " तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है; इसलिए मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं; परन्तु मैं यह चाहता हूं, कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो। ."
विषय वाक्य	विश्वासयोग्य मित्रो और साथी-सहकर्मियों को अंतिम विदाई।
जीवन सिद्धन्त	प्रत्येक व्यक्ति मूल्यवान है और परमेश्वर के राज्य को अग्रसर करने में के उस का सहयोग है !

सारांश: हमने इस सम्पूर्ण पत्र में पौलुस के ह्रदय को देखा है। यहां वह अपने मित्रो का नाम लेकर संबोधित करता है, वह इस को व्यक्त करता हुआ कहता है उन्होंने अपने जीवन को किस प्रकार समृद्ध किया है और वह उनकी कितनी अधिक सराहना करता है। यह हमारे ईमेल, कॉल और वार्तालाप करने के हमारे अभ्यास करने के सामान ही एक अच्छा विचार प्रतीत होता है। हम सभी को परमेश्वर के कार्यो में आगे बढ़ते रहने के लिए एक उत्साहजनक स्पर्श या शब्द की आवश्यकता होती है। आत्मिक रूप से देखभाल करने और समृद्ध करने के लिए परमेश्वर ने आपको किसके जीवन में रखा है?

पौलुस यह पर 29 मनुष्यों का वर्णन करता है, उनमें से 1/3 महिलाओं का उल्लेख है, ऐसा प्रतीत होता है की उन में से आधे लोग दास श्रेणी में से आते है। इस पूरी सूची में हम रोम की कलीसिया की राष्ट्रीय, जातिय और सामाजिक पृष्ठभूमि के विषय में कुछ संकेतो को जन सकते है। कुछ बधुये है, कुछ दास, कुछ राज परिवार के , कुछ यूनानी , कुछ यहूदी और कुछ रोमी । यह और कहाँ पर प्राप्त हो सकता है कलीसिया उन का यीशु में जो उन का स्थान के कारण उन का मूल्य जानती है न कि उन के सामाजिक परिवेश, लिंग, पद, राष्ट्रीयता, समूह के कारण, इस प्रकार की स्वतंत्रता के विषय में पौलुस अपनी अन्य पत्रियो में भी लिखता है। गलातियों 3:11 में कहता है कि "न तो यहूदी है और न ही यूनानी , न तो कोई दास है और न ही स्वतंत्र है। न तो कोई पुरुष है और न ही स्त्री , क्योंकि तुम सब ईसा मसीह में एक हो।

विशेष रूप से, हम बहुत सी स्त्रियों के विषय में जानते हैं जिन्होंने सुसमाचार को फैलाने के कार्य में सहायता की थी, जिन्हें उत्तरदायित्व और सम्मान दोनों प्रदान किये गए थे । नए नियम के समय में , हम प्रारम्भिक कलीसियाओ में स्त्रियों और उनके महत्व के विषय में पढ़ते है। स्त्रियाँ सहकर्मी थी, सभी जातियों और पृष्ठभूमि में स्वीकृत और सम्मानित थीं। आज हमें दुःख के साथ स्वीकार करना चाहिए कि हमारी कलीसियाओ में इस तरह की विविधता और एकता को आत्मसात करने में असमर्थता प्रदर्शित होती है, परन्तु हम सभी का परमेश्वर के कार्य में एक भाग है! यह अनुभव हमको अपनी बुलाहट के द्वारा आता है, पौलुस को प्रेरितों के काम 9: 15-16 में परमेश्वर द्वारा एक बहुत ही विशिष्ट बुलाहट के साथ बुलाया गया था, उसी के समान हम में से प्रत्येक के पास हमारे जीवन में परमेश्वर की दया के विषय में एक अद्भुत सौंदर्य कहानी है! प्रत्येक व्यक्ति पौलुस के लिए महत्वपूर्ण है, वह उन्हें प्रिय, परिजन, सह-कर्मी, चुना हुआ, मेरे लिए माँ कहता है। मसीह में हमारी एकता के कारण, हमें संसार से अलग दृष्टिकोण प्रदर्शित करना चाहिए। यह व्यवहार हमारे पड़ोस, हमारे कार्यस्थल, हमारी मित्रता और हमारे शिक्षा में प्रदर्शित होना चाहिए।

पद 17में पौलुस ने उनका ध्यान में उस शिक्षा के विरुद्ध चेतावनी की और लगता है जिस के कारण झगड़े और कठिनाइयां होती है, जो शिक्षा पौलुस ने उन को दी थी उस के वह विपरीत है। वह वह उन लोगो को उन लोगो से दूर रहने के लिए कहता है जो उन को इस प्रकार की विभजन वाली शिक्षा प्रदान करते है । उन सांसारिक बाते जिन का हमने भूतकाल में सामना किया था यदि हम आज उन के विरुद्ध नहीं खड़े होते है तो वह आज भी अपना प्रभाव को छोडती है , । हमें शैतान, संसार और हमारे शारीर के साथ अपने युद्ध के विषय में ज्ञान होना चाहिए । परमेश्वर ने क्रूस पर युद्ध को जीत लिया है और इस लिए हमें अपने जीवन के वर्तमान संघर्षो में विजय को प्राप्त करना है

इस महान अध्ययन को समाप्त करते हुए हम को स्मरण दिलाया जाता है, कि रोमियों12:1 में पौलुस ने क्या कहा था, "इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण(दोषमुक्त, शुद्धिकरण, महिमा) दिला कर

बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

"दूसरे शब्दों में, इन सभी महान तथ्यों को देखते हुए सबसे उचित, बुद्धिमान, विचारशील, उद्देश्यपूर्ण कार्य जो आप अपने जीवन में कर सकते हैं, जिस की धोषणा पौलुस ने की है। कि तुम, अपने आप को परमेश्वर को समर्पित कर दो और उस के लिए जीवन व्यतीत। और कुछ नहीं है जो आप को पूर्ण रूप से संतुष्ट कर सकता है। इसलिए, अपने आप को उस को समर्पित कर दो। यह एकमात्र उचित, मूल्यवान , जीवन को बचने वाला मार्ग है। जब आप ऐसा करते है, तब आप पाएंगे कि आप के जीवन में जितने भी सम्बन्ध है उन में आप का जीवन परिवर्तित हो जायेगा। सर्व प्रथम, आपके भाइयो के साथ आप के सम्बन्ध परिवर्तित हो जायेगे, जिस प्रकार से 12 अध्याय के अंतिम भाग मे हम को पढने को मिलता है । आपके शरीर को प्रस्तुत करने से कलीसिया में आपका जीवन प्रभावित होगा। फिर, अध्याय बारह और अध्याय तेरह के उत्तरार्द्ध में, वह कहता है कि यह आपके शासन की शक्तियों को प्रभावित करेगा, सामान्य रूप मनुष्यों में और समस्त समाज में दिखाई देगा। यहां तक कि आपके अन्दर पाया जाने वाला दृष्टिकोण भी भिन्न हो जायेगा, जिस की चर्चा अध्याय चौदह गई है। कमज़ोर लोगों के प्रति आपका दृष्टिकोण जिस प्रकार मसीह में आने से पहले था वह पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जायेगा । (अध्याय पंद्रह) और खोया के प्रति आपका दृष्टिकोण भी पूर्ण रूप से भिन्न होगा। उन तक पहुचने के लिए आप के अन्दर एक ज्वलनशील उत्साह होगा, क्योंकि आप भी खो गए थे फिर भी उस ने हमें दया दी गई। परमेश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ना स्वयं को परमेश्वर को समर्पित करना है, जैसा उसने भी उन लोगो के लिए क्या था जिन से वह प्रेम करता है और जिन को वह अपने राज्य में बुलाता ।

" अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा। परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा मानने वाले हो जाएं। उसी अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।" क्या आप को ज्ञात है कि आप मसीह देह के सदस्य होने के लिए बुलाये गए है? क्या आप अच्छी तरह से समाप्त करने की ओर ध्यान केन्द्रित कर रहे है?